साप्ताहिक

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

समय माया

R.N.I. No.: MP/HIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

Cell: +91 9425125569
+91 9479535569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission

In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष 17 | अंक 38 | प्रति सोमवार इंदौर, 22 अप्रैल से 28 अप्रैल 2024 | पृष्ठ 8 | मूल्य 5/- रुपए

ईरान पर इजरायल ने किया हमला

इस्फ़हान शहर में मिसाइलों से धमाके

रिपोर्ट्स में कहा गया है, ईरान के कई शहरों में धमाकों की आवाज सुनी है. एबीसी न्यूज ने ईरान में मिसाइलों से हमला करने की रिपोर्ट दी है, ईरान के राज्य टीवी ने इस्फ़हान में विस्फोटों की रिपोर्टिंग की गई है.

इसराइल की ओर से ईरान पर हमला किए जाने की खबर है. रिपोर्ट्स में कहा गया है, ईरान के कई शहरों में धमाकों की आवाज सुनी है. रिपोर्ट्स के मुताबिक ईरान के **Isfahan** शहर में हमला किया गया है. खबरों में ईरान के न्यूक्लियर प्लांट पर मिसाइल दागे जाना का दावा किया जा रहा है.

किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है. न ही ईरान की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया आई है. दमिश्क में ईरान के वाणिज्य दूतावास परिसर पर इजरायली हमले के बाद पिछले शनिवार को ईरान ने भी ड्रोन और मिसाइलों की बौछार की थी. जिसके बाद इजरायल ने जवाब देने का वादा किया था.

इस्फ़हान शहर के पास नटान्ज़

संयुक्त राज्य अमेरिका और कई यूरोपीय देश इज़राइल से ईरानी हमले का जवाब नहीं देने की लगातार कोशिश कर रहे हैं. ईरान में जहां हमला हुआ वह इस्फ़हान शहर रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण शहर माना जाता है. इसके पास नजदीकी शहर नटान्ज़ ईरान के **nuclear enrichment** में से एक का है.

कॉमर्शियल फ्लाइट्स ने शुक्रवार की सुबह बिना किसी स्पष्टीकरण के पश्चिमी ईरान में अपने रूट्स को डायवर्ट शुरू कर दिया. क्योंकि ईरान में अर्ध-आधिकारिक फ़ार्स समाचार एजेंसी ने कहा कि इस्फ़हान शहर में 'विस्फोट' सुना गया है.

अपनी रक्षा के लिए फैसला खुद

ईरान के जवाबी हमले के बाद से ही इजरायल लगातार यूएन में इस मुद्दे पर बात कर रहा है. इजरायलल से अमेरिका ने कहा था कि वह अब ईरान पर फिर से हमला न करे, लेकिन इजराइल केल पीएम नेतन्याहू ने कहा था कि वे सभी की सलाह सुनेंगे लेकिन फैसला अपनी रक्षा के लिए खुद करेंगे. दूसरी ओर ईरान ने जब इजरायल पर जवाबी हमला किया था तो उसने अपनी बात रखते हुए कहा था कि यह हमने अपनी आत्मरक्षा में किया है. क्योंकि पहले इजरायल ने सीरिया में मौजूद ईरान के दूतावास के परिसर पर हमला कर दिया था.

इसके बाद फिर से ईरान के विदेश मंत्री होसैन आमीर-अब्दुल्लाहियन ने इजरायल को ईरानी हितों को निशाना बनाकर कोई भी सैन्य कार्रवाई करने के खिलाफ चेतावनी दी थी.

भारत आपने नागरिकों निकालेगा

ईरान और इज़राइल के बीच बढ़ते तनाव के बीच भारत आपने नागरिकों की निकासी के लिए गम्भीरता से विचार कर रहा है. वायुसेना और नौसेना के साथ भी विदेश मंत्रालय सम्पर्क में है.

वे इज़राइल से 1 अप्रैल को दमिश्क में एक वरिष्ठ ईरानी जनरल की इज़राइल द्वारा हत्या के साथ शुरू हुई घटनाओं की खतरनाक श्रृंखला के तहत एक रेखा खींचने का आग्रह कर रहे हैं।

इज़राइल पर हमास के हमलों के छह महीने से अधिक समय बाद, गाजा में युद्ध जारी है और यह लेबनान-इज़राइल सीमा के दोनों ओर और खाड़ी तक फैल गया है।

डर यह है कि मध्य पूर्व वैश्विक और क्षेत्रीय खतरों के साथ चौतरफा युद्ध के कगार पर है।

इस्फ़हान में जो कुछ हुआ, ईरानी उसके महत्व को कम कर रहे हैं। **(शेष पेज 6 पर)**

लोकसभा के प्रथम चरण में 102 सांसदों के लिए मतदान हुआ

आखिर इवीएम में मदरबोर्ड क्यों?

जितने लंबे समय तक मशीन स्ट्रांग रूम में बंद, ज्यादा जालसाजी मेमोरी कार्ड जैसी चिप से भी गणक व संग्रहक का कार्य संपन्न हो सकता है

भारत में चुनावों के लिए उपयोग की जा रही अत्यधिक आपवादिक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन पूर्णता दर्शाती युक्त होने के साथ जी चुनाव कार्य को करवाने के लिए मात्र साधारण कैलकुलेटर की तरह की छोटी सी मेमोरी कार्ड बराबर चिप से पूरी मशीन सही परिणामों के साथ चलाई व बनाई जा सकती थी। पर उसमें मदर बोर्ड लगाकर उसमें जीपीआरएस जीपीएस वायरलेस वी-फी ब्लूटूथ क्यों लगाए गए और उसे कहीं से भी संचालित करने की क्षमता क्यों विकसित व लगाई गई जिसका उद्देश्य ही जलसा जी कर चुनाव परिणामों को बदलना था। मदरबोर्ड लगा होने के कारण उसमें आसानी से निर्वाचन अधिकारी मदरबोर्ड के जरिए प्रोग्रामिंग करके उसको निर्देशित कर सकता है कि पहले सो वोट जिसमें 50 की जांच की जाएगी सही तरीके से डालना उसके बाद में हर तीन वोट में से दो वोट इच्छित को देना। बटन दबाने पर वीवी पेट प्रिंटिंग मशीन

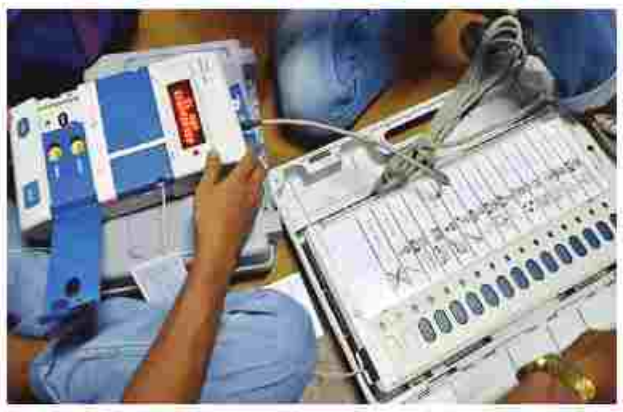

मतदाता को वही दिखाएंगे जिस पर उसने बटन दबाया है परंतु वोट वह सॉफ्टवेयर की प्रोग्रामिंग के अनुसार, सत्ताधीश दल के प्रत्याशी को ही देगी। दूसरी तरफ यदि मतदान के समय सफल नहीं भी हो पाए। तो चुनाव आयुक्त मतदान के जिस षड्यंत्र कारी तरीके से साधनों का अभाव बताकर तारीखे सत्ताधीश दल की इच्छा अनुसार निर्धारित करने के साथ जो मतदान पूरे देश में 15 दिन में करवाया जा सकता है उसे दो से तीन महीने तक लंबा खींचकर हारने वाली सीटों पर प्रथम चरण में ही मतदान करवा लिया जाता है **(शेष पेज 3 पर)**

इंदौर नगर निगम में हर विभाग में है भारी भ्रष्टाचार

निगम में हजार करोड़ से ज्यादा हजम करते हैं नेता, अधिकारी, कर्मचारी

कलेक्टर आयुक्त से लेकर दैवेभो तक की हर कार्य में हिस्सेदारी, 28 करोड़ तो तिनका भी नहीं

इंदौर नगर निगम में नाला पाटने के नाम पर जो 28 करोड़ रुपए का भ्रष्टाचार सामने आया है यथार्थ में यह हर वर्ष होने वाले भ्रष्टाचार का एक तिनका भी नहीं। जबकि वहां तो हर विभाग में हर कदम पर भ्रष्टाचार की फसल हर काम में शिकायत आने, करवाने के बाद पार्षद व उसके चेलों द्वारा प्रस्ताव बनाने, पास करवाने डीपीआर बनाने से लेकर निविदाये जारी करने निविदाएं भरने, कार्यादेश करने से लेकर साइट खाली करवाने कार्य शुरू करने संपन्न करने के बारे में वहां के उप यंत्री सहायक यंत्री द्वारा कार्य की देखरेख फर्जी ना पुस्तिकाएं भरने, निरीक्षण करने बिल बनाने भुगतान करने तक में निश्चित प्रतिशत के हिसाब से वसूली कि फसलें काटी जाती रहती हैं। सबका यह दैनिक वेतन भोगी संबंधित कर्मचारी बाबू अधिकारियों से लेकर

सहायक उप व निगम आयुक्त से कलेक्टर संभागीय आयुक्त पार्षद महापौर से लेकर छोटे भैया गली मोहल्ले के नेताओं तक धन वितरित होता रहता है। जहां-जहां जिस स्तर पर जिसके हस्ताक्षर की चिड़िया बैठाने की क्षमता होती है। धन वितरित होता रहता है। 50000 करोड़ रुपए से ज्यादा के इंदौर नगर निगम के बजट में सही मायने में 10 से 40% और कई कार्यों में 100% तक का पूरे फर्जी बिलों के माध्यम से भ्रष्टाचार किया जाना बहुत मामूली खेल होता है और यह कहानी इंदौर नगर निगम की ही नहीं प्रदेश की सभी नगर निगमों पालिकाओं परिषदों तक की होती है वहां पर आने वाले जितने भी सरकारी कर्मचारी अधिकारी प्रतिनियुक्ति पर भेजे जाते हैं।

(शेष पेज 2 पर)

साप्ताहिक समय माया

संपादकीय

वाचालता का बोलवाला, सच्चों को जेल का निवाला

प्रकृति में वाचालता वैसे तो नारियों का स्वाभाविक गुण है। परंतु नरों में यह कम ही पाई जाती है। वर्तमान में देश की सत्ता पर वाचालों ने अपनी वाचलता से जनता को दिवा स्वप्न दिखा बड़े लंबे चौड़े झूठे वादेकर सत्ता तो हथिया ली थी। पर सत्ता चलाने और वाचालता में कहीं कोई संबंध नहीं होता। वाचालता आभासी तात्कालिक रूप से अपने भाषणों में श्रुतम को भ्रमित कर दिवस स्वप्न दिखा लंबे चौड़े वादे कर 15 लाख सबके खाते में डालूंगा। अच्छे दिन आ जाएंगे। की भ्रमित आम निर्धन जनों को प्रसन्न करने की हुंकारने की वाणी तालियां ठुकवा सकती है। लोगों को भ्रमित कर चंद पलों के यह कृत्रिम मस्तिष्क में स्पंदन पैदा कर जनता को नये कल्पना लोक में धकेल कर एक दो बार मत प्राप्त कर सत्ता दिलवा सकती है। बार-बार नहीं। दूसरी तरफ यथार्थ में वाचाल व्यक्ति के व्यक्तित्व में जाहिलता, मौज मस्ती दिखावे के साथ, अपराध करने उन अपराधों, झूठों से दिमाग हटाने, लोगों को बातों में उलझाने, अपनी खोखली शान बघारने, अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के अहंकार की मानसिकता कूट-कूट कर भरी होती है।

उसके लिए आम नागरिकों पर लागू होने वाले कोई कानून लागू नहीं होते उसके अपने कानून होते हैं। अपनी दिनचर्या जिसमें अहंकार, श्रेष्ठता, शक्ति का प्रदर्शन, करने के लिए बार-बार वस्त्र बदलना अच्छा महंगे से महंगा भोजन करना, घूमने फिरने के दिखावे के लिए उसके पास अच्छे से अच्छे वाहन, कारें हवाई जहाज हो, उसके लिए वह चारों तरफ ऐसे दिखाए को स्वीकार करने और तारीफ करने वाले जालसाज पूंजीपति अधिकारी चारों तरफ हूं जो उसकी निचली गंदी सोच का फायदा उठा अपने तरीके से उसके सामने टुकड़े डालकर उसके अहंकार को पूरा करते हैं और बदले में बड़े-बड़े संसाधनों पर अपना कब्जा कर लेते हैं। पर उसे यह सब करने में आत्यधिक आनंद आता है। उसकी आंतरिक की इच्छा सदा यह रहती है। क्यों है अपनी हर नौटंकी कैमरे पर जनता को दिखाएं। उसे हर वक्त अपनी नौटंकी को जनता को दिखाने के लिए कैमरामैनों की जरूरत होती है। भले ही वह वास्तविकता में घोर दुर्जन, अपराधिक डकैत लूटेरा हो। पर जनता इस सच को ना समझे। वह उसके वाचालता के लच्छेदार मनभावन चितचोर प्रवचनों, भाषणों में उलझी रह बस उसकी प्रशंसा देखी और करती रहे।

भले ही देश की जनता यथार्थ में फटे कपड़ों में बेरोजगारी से भूखी सोती रहे की गंदी और छोटी सोच जैसा कि आप वर्तमान में देख रहे हैं। दूसरी तरफ ऐसे वाचाल जाहिल पाखंडी स्वाभाविक है। आंतरिक रूप से बहुत कमजोर टूटा हुआ और डरपोक होता है। इसलिए उसे अपने सच से बहुत डर लगता है। वह अपने चारों तरफ छल, बल, दल से साम, दाम, दंड भेद की नीति पर चल अपनी चारों तरफ अपनी झूठी प्रशंसा करने वाले भांड भड़वे पत्रकारों, मिडिया चैनलों को पाल पोसकर जनता को अपनी प्रशंसा के बारे में सुनाता समझाता रह अपने सारे अपराधों कुकर्मों लूटने बर्बाद करने के सद्कर्मों को दबाता छुपाता रहता है। जो उसका सच बताते हैं। उन्हें वह शक्ति और छद्म श्रेष्ठता के दम पर षड्यंत्र में फंसा कर जेल का निवाला खाने के लिए मजबूर कर देता है। जैसा कीदिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के साथ हो रहा है। क्योंकि दिल्ली का मुख्यमंत्री है। इसलिए उसे अपने शक्ति प्रदर्शन में जो हथियार अधिकार अपनी वाचालता से सत्ता के साथ मिले हैं उनका दुरुपयोग करना अपने सच बोलने वालों को डराना धमकाना ना मानने पर शक्ति का दुरुपयोग कर सरकारी संस्थाओं को निर्देशित कर अपनी वास्तविकता और सच्चाई बताने वालों को उसके दम पर झूठे झूठे आरोप लगाकर कानूनों में उलझा कर आखिर न केवल अरविंद केजरीवाल को जेल में भेज दिया वरुण उसकी पाली पोसी वैधानिक संस्थाओं के न्यायाधीशों पुलिस अधिकारियों को भी सट्टा का दुरुपयोग कर मुंह बंद रखने के लिए जेल में निवाला खाने के लिए मजबूर कर दिया गया है। प्रकृति का नियम है जो प्राणी का जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्य होगी। ठीक है, मनुष्य के अतिरिक्त इस कड़वे तथ्य को अन्य प्राणी नहीं समझ सकते हैं। परंतु सत्ता के नशे में चूर पाखंडी मनुष्य जानकार भी अंजान बन करोड़ों लोगों की भूख बेरोजगारी बीमारी की की परेशानियों को दूर रख केवल चारों तरफ अपने प्रकृति और स्वभाव के अनुकूल अपने ही जैसे छद्म छल बल दल के दम से धन सत्ता प्राप्त करने वाले चाटुकारों सेगिरा रहकर अपनी व देश की जनता की बर्बादी में सतत लगा रहता है। बेशक नर को प्रकृति ने बहुत कमजोर बनाया है। जो वाचालों की वाणी में उलझ सब देख सुन समझ और उसके परिणामों की भयंकर पीड़ा भोगने के बाद में भी वाचालों से मुक्त होना नहीं चाहता।

निगम में हजार करोड़ से ज्यादा हजम करते हैं नेता, अधिकारी, कर्मचारी

पेज 1 का शेष

सब दोनों हाथ से मोटी कमाई करके अपने आकाओं को प्रभार शुल्क महीने की किस्त के रूप में भी चुकाया करते हैं। इसलिए किसी की भी भ्रष्टाचार और जालसाजी पकड़े जाने पर ज्यादा हो-हल्ले, यह समाचार पत्रों में ज्यादा छापने हल्ला मचने पर जांच की नौटंकी आवश्य जाती है पर अधिकांश ऐसी जांचो में उन्हें भ्रष्ट अधिकारियों इंजीनियरों डॉक्टरों को ही पदस्थ कर किया जाता है। जिनके अंतर्गतवह कार्य खरीदी आदि संपन्न की जाती है स्वाभाविक है ना वह कभी जांच पूरी होती है और ना दोषी कर्मचारी पकड़ में आते हैं हां कहानी यदि सत्र व जिला न्यायालय से उच्च न्यायालयों तक पहुंचती है।

बेशक अपने भ्रष्ट अधिकारियों दलालों के माध्यम से सरकारी वकील जो वर्तमान में स्वयं अब महापौर है। सेटिंग करके तारीखे बढ़वाने मामले को उलझाना, सुनवाई की तारीखें लंबी खींचने झूठे शपथ पत्र देकर फकाकारों से लेकर न्यायालय तक को भ्रमित करना आदि के षड्यंत्रवर्षों से चलते रहे हैं। सैकड़ों करोड़ के भ्रष्टाचार बड़े निर्माण कार्यों जिसमें गरीबी उपशमन के लिए बनाए जाने वाले गरीब, मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री आवास योजना की जमीनों से लेकर निर्माण कार्यों में 10 से 30-40% तक का भ्रष्टाचार किया जाना जो सैकड़ों करोड़ की योजनाएं होती हैं बहुत स्वाभाविक सी बात है ऐसे ही आपने देखा 1200 करोड़ रुपए तो केवल खान नदी की सफाई एसटीपी का निर्माण नालों की सफाई नालियां बिछाना आदि के नाम पर हजम कर लिए गए जबकि पिछले 25 सालों में नालियों के निर्माण बचने स्ट्रांग वाटर लाइन डालने के नाम पर लगभग 5000 करोड़ रुपए बर्बाद कर दिया गया। नालियां बिछाने सड़के खोदने बनवाने के कार्य जो यथार्थ में पार्षदों उनके चेलो से लेकर ठेकेदारों इंजीनियर अधिकारियों बाबूओं पिछले 25-30 सालो से सबसे ज्यादा दुधारू गाय है। हजारों करोड़ के ठेके भी हुए। जिसे बड़ी-बड़ी कंपनियों ने लेकर बिना शहर के कांटूर व टोपो मैप को देखे, पुराने नक्शा के आधार पर बनाई गई 47 के पहले की नदी नालियों से लेकर वर्तमान तक किसने कहां पर कितने नालियां बिछाई कौन सी नाली कहां बिछी है या स्टार्म वाटर लाइन डाली हुई है बिना ध्यान में रखें सबको भ्रष्टाचार के हिसाब से उनके ही खास छोटे-छोटे पार्षदों ठेकेदारों को देखकर काम करवा कर पूरे शहर को खुदा भी गया।

पाइप लाइन भी डाली गई परंतु आपने देखा कि शहर किया इन पाइप लाइनों पर बनाये गये चैंबर कहां निर्धारित माप के अनुसार बनाया गया और ना ही उनके ढंग से मजबूत ढक्कन लगाए गए आज हालात यह है पूरे शहर के अंदर 20000 से ज्यादा चैंबरों पर लगाए गए ढक्कन सड़कों पर दुर्घटनाओं का कारण बन रहे हैं और पानी बरसने पर आधा घंटे की बारिश में ही पूरे शहर को तालाब बना देते हैं। उसके पीछे सारा खेल भ्रष्टाचार का है। फिर भ्रष्टाचार में केवल जनकार्य विभाग ही नहीं जलापूर्ति एवं निकासी, सफाई के नाम भी हर महीने लगभग 2 से 5 करोड़ रुपए का भ्रष्टाचार दैनिक वेतन भोगी ठेका सफाई कर्मियों आदि के वेतन के भुगतान से लेकर, सफाई में काम आने वाली हार्डवेयर में जबकि स्वयं सफाई कर्मी नौकरी करने के लिए खरीद कर लेकर आते हैं। शहर में मौसम की प्रकोप के कारण होने वाले मच्छरों को साफ करने के लिए भी ठेके की ओर निगम की स्वयं की गाड़ियां डीजल पेट्रोल खर्च करते हुए कर्मचारियों का वेतन सफाई के लिए कीटनाशक आदि का करोड़ो रुपए का भुगतान पर दिखा दिया जाता है जबकि कहीं पर भी धुआं उड़ाने वाली मशीन नजर ही नहीं आती है। में भी हर वर्ष करोड़ो रू कागज में खर्च दिखाकर हजम कर लिए जाते हैं।

फिर डकैतों और जालसाजों की सरकार छोटे-मोटे फकाकारों से लेकर बड़े सच बोलने लिखने वाले फकाकारों के फोनों की जासूसी करवाती है और देखते हैं कि उसके खिलाफ उसका सच कौन बता कर जनता को समझा दिखा रहा है?

परंतु वह अपने ही सरकार के विभिन्न मंत्रालय के अंतर्गत काम करने वाले विभागों के भ्रष्ट कर्मचारियों, अधिकारियों, ठेकेदारों, आपूर्ति कर्ताओं आदि के नंबरों की टेपिंग करके सच क्यों नहीं जाना जाता क्यों जनता को 1500 से ज्यादा वस्तुओं में जीएसटी में और नगर निगम के कारों की तो आप जानते हैं की भरमार लगी हुई है हर बात में टेक्स्ट ठोक कर जनता को लूटती है आखिर उसे लूट हुई टैक्स का सूचना के अधिकार में पारदर्शिता के अंतर्गत अपनी सीटों पर अपलोड क्यों नहीं किया जाता इसलिए ना ताकि सभी भ्रष्टाचार के हमाम स्नान तो पूरा करें पर जनता को ना दिखे।

आयुक्त का दिखावे का कड़ा रुख

निगम को आर्थिक हानि पहुंचाने वाली कोई भी फर्म, एजेंसी अथवा अधिकारी या कर्मचारी को बक्शा नहीं जायेगा, कड़ी से कड़ी कार्यवाही होगी

■ कूटरचना करते हुए निगम को आर्थिक क्षति पहुंचाने वाली फर्म एवं उनके प्रोपराइटर की अन्य समस्त फर्मो को किया ब्लैकलिस्टेड

■ नगर निगम इंदौर की समस्त निविदाओं एवं कार्यो के साथ ही भुगतान पर लगाई रोक

इंदौर दिनांक 19 अप्रैल 2024। आयुक्त श्री शिवम वर्मा द्वारा निगम को आर्थिक हानि पहुंचाने का प्रयास करने पर कड़ा रुख अपनाते हुए, निगम को आर्थिक क्षति पहुंचाने वाली फर्म एवं उनके प्रोपराइटर की अन्य समस्त फर्मो को किया ब्लैकलिस्टेड करते हुए नगर निगम इंदौर की समस्त निविदाओं एवं कार्यो के साथ ही भुगतान पर लगाई रोक लगाई गई।

आयुक्त श्री शिवम वर्मा द्वारा आदेश जारी करते हुए, नगर पालिक निगम, इंदौर के ड्रेनेज विभाग से संबंधित विभिन्न कार्यो के 20 देयकों की कूटरचना करते हुए नगर पालिक निगम, इंदौर के कोष से राशि रूपये 28.76 करोड का भुगतान प्राप्त करने के प्रयास के संबंध में निगम स्तर से की गई प्राथमिक जॉच में (1) मेसर्स नीव कंस्ट्रक्शन इंदौर, प्रोप्रा. मो. साजिद, 147, मदीना नगर, इंदौर (2) मेसर्स ग्रीन कंस्ट्रक्शन इंदौर, प्रोप्रा. मो. सिद्दीकी, 147, मदीना नगर, इंदौर (3) मेसर्स क्षितिज इन्टरप्राईजेस प्रोप्रा. श्रीमती रेणु बडेरा, 6, आशीष नगर, इंदौर (4) मेसर्स जहान्वी इन्टरप्राईजेस प्रोप्रा. राहुल बडेरा, 12, आशीष नगर, इंदौर (5) मेसर्स किंग कंस्ट्रशन इंदौर, प्रोप्रा. मो. जाकिर, 147, मदीना नगर, इंदौर को संलिप्त पाया गया है। उपरोक्त घटनाक्रम के अनुक्रम में आयुक्त श्री शिवम वर्मा द्वारा एजेंसियों पर वैधानिक कार्यवाही करते हुए नगर पालिक निगम, इंदौर की ओर से महात्मा गांधी रोड (एम.जी. रोड) थाना इंदौर में दिनांक 16/04/24 को प्राथमिकी (एफ.आई.आर.) दर्ज कराई गई है।

साथ ही इन एजेंसियों एवं इनके प्रोपराईटर्स के उक्त कृत्यों को दृष्टिगत रखते हुए उल्लेखित फर्मो एवं इनके प्रोप्राराईटरशिप / पार्टनरशिप की अन्य समस्त फर्मो को नगर पालिक निगम, इंदौर की समस्त निविदाओं एवं कार्यो के लिये तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित /ब्लेक लिस्टेड करते हुए इनके समस्त भुगतानों पर भी आगामी निर्णय/आदेश तक रोक लगाई गई। विदित हो कि आयुक्त श्री शिवम वर्मा द्वारा निगम को आर्थिक हानि पहुंचाने का प्रयास करने पर कड़ा रुख अपनाते हुए निगम के अधिकारियों अथवा कर्मचारियों की संलिप्तता होने और ई नगर पालिका में प्रविष्टियों के संबंध में आईटी सेल से जांच कराने हेतु अपर आयुक्त श्री सिद्धार्थ जैन की अध्यक्षता में जॉच समिति का गठन किया गया है, गठित जॉच समिति में अपर आयुक्त लेखा श्री देवधर दरवई, श्री आर एस देवड़ा सहायक यंत्री, श्री रमेश चंद्र शर्मा सहायक लेखा अधिकारी, श्री अभिनव राय प्रभारी अधिकारी आईटी सेल श्री आशीष तागड़े सहायक लेखापाल श्री रुपेश काले सहायक लेखापाल की गठित की गई।

आयुक्त श्री शिवम वर्मा द्वारा समिति को निर्देशित किया गया कि जॉच में कोई भी दोषी, अपचारी अधिकारी/कर्मचारी जो उपरोक्त प्रकरणों में सम्मिलित है, वह किसी भी कारण से बच नहीं सके तथा दोषी कर्मचारियों के विरुद्ध कड़ी से कड़ी वैधानिक कार्यवाही की जावेगी।

मप्र जनसंपर्क के सभी कार्यालय जालसाज डकैतों का अड्डा

सूचना का अधिकार जनसंपर्क कार्यालयों पर लागू नहीं

सहयोगी मध्य प्रदेश माध्यम हर साल करता है हजारों करोड़ के घोटाले

संभागीय जनसम्पर्क कार्यालय, इंदौर (म.प्र.)

क्र. /संजका/सूकाअ/2023-24 इंदौर, दिनांक 29-02-2024

प्रति,
श्री ए पी एस कुमार
क्वाटर 3, एलआईजी, एमआईजी गुरूद्वारे के पीछे
इंदौर

विषय - सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत जानकारी प्रदान करने के संबंध में।
सन्दर्भ - आपका आवेदन-पत्र प्राप्ति दिनांक 05.02.2024।

-0-

आपके द्वारा दिया गया सूचना के अधिकार के तहत के आवेदन में चाही गयी जानकारी व्यापक जनहित से जुड़ी हुई नहीं है। आपके द्वारा चाही गई जानकारी पूरी तरह से अस्पष्ट और विशेषीकृत नहीं होकर वृहद स्वरूप की है।

यदि आप दी गई सूचना से संतुष्ट नहीं है या असहमत है तो श्री आर.आर. पटेल, अपीलीय अधिकारी, संभागीय जनसम्पर्क कार्यालय, इंदौर को 30 दिवस की अवधि में 50 रूपये शुल्क के साथ प्रथम अपील प्रस्तुत कर सकते है।

(महिपाल अजय)
लोक सूचना अधिकारी
जनसम्पर्क, इंदौर

संभागीय जनसम्पर्क कार्यालय, इंदौर

क्रमांक 535 /संजका/सूकाअ/2024 इंदौर, दिनांक

प्रति,
श्री ए पी एस कुमार
क्वाटर 3, एलआईजी, एमआईजी गुरूद्वारे के पीछे
इंदौर

विषय - सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के तहत की गई अपील के संबंध में।
सन्दर्भ :- आपका आवेदन-पत्र प्राप्ति दिनांक 11.03.2024।

-0-

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के तहत आपकी अपील पत्र प्राप्त हुआ है। उक्त अपील का अवलोकन किया गया।

अवलोकन के उपरान्त यह निर्णय लिया जाता है कि लोक सूचना अधिकारी श्री महिपाल अजय द्वारा जो निर्णय लिया गया है, वह उचित है। इसलिये लोक सूचना अधिकारी को किसी प्रकार का आदेश दिया जाना न्यायोचित नहीं होगा।

प्रथम अपील का निराकरण मेरे द्वारा किया गया। मेरे निर्णय से यदि आप संतुष्ट नहीं हैं या असहमत हों तो मुख्य सूचना आयुक्त, मध्यप्रदेश राज्य सूचना आयोग, 35-बी भूतल भवन, अरेरा हिल्स, भोपाल को 90 दिवस की अवधि में 100/-रूपये शुल्क के साथ द्वितीय अपील प्रस्तुत कर सकते हैं।

(आर. आर. पटेल)
अपीलीय अधिकारी
जनसम्पर्क, इंदौर

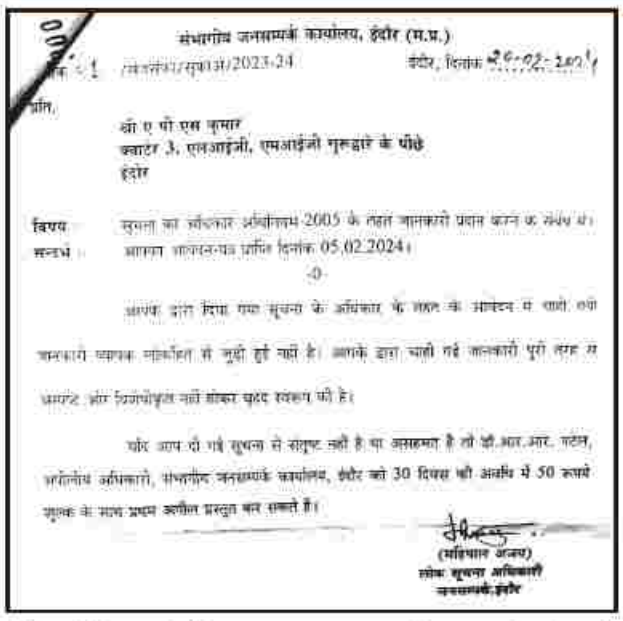

मध्य प्रदेश की सरकार के जनसंपर्क कार्यालय मे आयुक्त से लेकर सभी संभागो और जिलो मे बैठे संभागीय व जिलो के जनसंपर्क अधिकारी भी अपने आप को सरकार से ऊपर समझते हैं। यहां के घोटाले और जालसाजो के बारे मे पिछले 25 सालो से लगातार छप जाता रहा है और यह हरामखोर भ्रष्टो और जालसाजो डकैतो के अड्डे मे छोटे दैनिक व साप्ताहिक पत्रकारो का घोर शोषण करने के साथ, विज्ञापन देने की बात तो बहुत दूर उल्टे ही वार्षिक फाइले जमा करने, महीने के सभी समाचार पत्र देने पर पूर्णता प्रमाण पत्र देने मे भी पत्रकारों से वसूली की जाती है। बेशक यह हाल पूरे मध्यप्रदेश के सभी जिलो और संभागीय कार्यालयो का भी है।

प्रदेश मे होने वाले सभी प्रकार के कार्यक्रमो अति विशिष्ट व्यक्तियो के आने जाने रहने खाने पीने घूमने मंच लगाने सड़को पर प्रदर्शन करने का सारा का ममध्य प्रदेश जनसंपर्क के अधीन अत्यधिक बदनाम किसी भी शासकीय संगठन के अंतर्गत पंजीकृत नही कार्यरत मध्य प्रदेश माध्यम इन सब कार्यक्रमो के कई गुना ज्यादा कीमत पर अपने खास लोगो को ठेके देने और पूरा करवाने के बाद 30% से 70-80% तक का धन हजम कर जाता है यही कारण की यह हरामखोर कभी भी अपने इस सरकारी कार्यालय का मध्य प्रदेश महा लेखाकार से अंकेक्षण तक नहीं करवाते। और इस प्रकार से सेडमैप की तरह बने इस अवैधानिक गैर सरकारी बने हुए संगठन के माध्यम से पूरे प्रदेश के संभागो और जिलो मे बैठे अधिकारी भी 30 से 50% तक का हिस्सा हजम कर जाते हैं।

यही कारण है की जनसंपर्क की साइट होने के बाद मे भी मध्य प्रदेश मध्य का कोई भी शासकीय दस्तावेज सीटो पर ना तो उपलब्ध होता है ना उसकी निविदाओ, निविदाओ को भरने की जानकारी तक को निविदा की साइट पर नही डाला जाता। किसको कितना कहां कैसा भुगतान किया गया की कोई जानकारी कही पर भी उपलब्ध नही होती और यही कारण है कि वहां बैठा जनसंपर्क का आयुक्त इस मध्य प्रदेश के माध्यम से जो उसका एमडी होता है। हर महीने 10 20 25 करोड़ से लेकर सिंहस्थ जैसे कार्यक्रमो मे हजारो करोड़ हजम कर चुका परंतु उल्टे ही अपनी बदनामी और सियत का भ्रष्टाचार सामने ना आए सब घोर भ्रष्ट जालसाज डकैत शिवराज ने सभी संबंधित अधिकारियो को भ्रष्टाचार करने उनको बचाने के बदले मे मोटा धन वसूल करके पुरस्कार बांट दिए थे।

यही कारण है कि यह हरामखोरो का अड्डा 19 साल के बाद मे भी सूचना अधिकार अधिनियम की धारा 4 और उसके 25 बिंदुओ की जानकारी को अभी तक साइट पर अपलोड नहीं कर पाया। जबकि स्वयं जनसंपर्क कार्यालय एमपी इन्फो के नाम से सभी विभागो की लिंक के साथ मे स्वयं की साइट चलता आ रहा है बेशक जालसाजी और भ्रमित करने वाले अनेको तथ्य वहां मौजूद हैं और कई बार यह भी होता है कि उसकी साइट को क्लिक करो तो दूसरे आने को अन्य साईटो पर पहुंच जाते हैं अधिकांश विभागीय साईटो का भी यही हाल है जहां दिए गए यूआरएल की साइट तो नही खोल वरन वह उठाकर आपको दूसरे अन्य साईटो पर पहुंचा देता है। इंदौर की संभागीय जनसंपर्क कार्यालय मे सूचना के अधिकार में जो पत्र दिया गया था। उसके संबंध मेयहां बैठे संभागीय जनसंपर्क अधिकारी ने जालसाजी पूर्ण तरीके से जवाब देकर और अपील लगाने पर सीधे ही जानकारी न देने और बदतमीजी के साथ चले जाना कि आप सूचना आयोग मे जाइए स्पष्ट करता है कि जनसंपर्क कार्यालयो मे किस प्रकार का भ्रष्टाचार तांडव कर रहा है।

यह उपरोक्त पत्र जनसंपर्क कार्यालय के संभागीय जनसंपर्क अधिकारी इंदौर आर.आर. पटेल का है। जिसे सूचना के अधिकार मे पत्र दिया गया जब उसमे हरामखोर ने अपने लूट डकैती और भ्रष्टाचार को छुपाने केंद्र व राज्य सरकार से प्राप्त आदेश, उनके पालन प्रतिवेदन और कार्यो को संपन्न करने के लिए दिए गए विभिन्न विभागो को आदेश व उनके भुगतान किए गए बिलो की जानकारी मांगने मे उल्टी सीधी दलीलें देकर उसको टालने की कोशिश की गई। तो उसमे अपील लगाई गई और अपील लगाने के बाद मे भी इस हरामखोर संभागीय जनसंपर्क अधिकारी पटेल ने बिना अपील की सुनवाई चाहिए एक तरफा यह जवाब दिया। जैसे सब उनके बाकी जागीर हो कानून उनकी रखैल हो और यह सब भ्रष्टाचार लूट करते रहे और कोई उनसे कुछ ना पूछे और पूछे तो इस प्रकार से बदतमीजी पूर्ण लिखित जवाब दिए जाते हैं।

इस विभाग के बारे मे केवल पत्रकार व सरकारी कर्मचारी और अधिकारी जानते हैं और यह करोड़ो रुपए की लूट हर वीआईपी मूवमेंट मे जिसमे प्रधानमंत्री गृहमंत्री या मुख्यमंत्री के जितने भी मंच लगाने से लेकर गाड़ियां भोजन पानी और सभा स्थल का चयन होते हैं। इंदौर मे इन्वेस्टर मीट जी-20 कार्यक्रम जो हुआ उसमे भी इसमे करोड़ो के कई गुना ज्यादा के मोटा कमीशन वसूल कर चंदन लगाकर हजम किया।

अकेले परिवहन विभाग ही जैसा कि भोपाल के पत्रकार बताते हैं और लिखते हैं और भास्कर ने भी छाप की जो गाड़ियां लगाई गई थी उसमे लूना ट्रक ऑटो के नंबर डालकर भुगतान वसूल कर लिए जाते हैं। ऐसा ही यहां पर व पूरे प्रदेश मे होता है। और यही कारण है कि घोर भ्रष्ट जालसाजी का अड्डा परिवहन कार्यालय व उसके क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी से लेकर नीचे तक बैठे चपरासी बाबू सब अधिकारी आदि की कहानी तो रोज ही समाचार पत्रो में छपती रहती है।

सूचना के अधिकार मे जानकारी मांगने पर और जब अपनी लगाओ तो कलेक्टर जिसकी परमिट बांटने देने और ऐसे कार्यक्रमो में की गई जानकारी भ्रष्टाचार और डकैती मे हिस्सेदारी होती है। वह भी इन को बचाने के लिए अपील का जवाब देने की अपेक्षा दवा छुपा कर रख लेता है।

उसमे कई सारे काम जो लोक निर्माण विभाग बेरीकेडिंग हेलीपैड निर्माण व अन्य प्रकार की व्यवस्था मे, पुलिस सुरक्षा मे अपनी जवान लगाने के साथ-साथ यह हरामखोर भी निजी सुरक्षा एजेंसियो का बड़ा ठेका देकर मोटी हिस्सेदारी करते हैं। कलेक्ट्रेट खाद्य एवं औषधि, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, परिवहन विभाग नगर निगम के अधिकारियो व अन्य संबंधित विभागो को आदेश देकर काम करवाता है। और उन कार्यो के बिलो के भुगतान मे 30 से 60 70% तक की कमीशन खोरी करके हजम कर जाता है। कार्य तो और भी करता है उसके बारे मे बाद मे बात की जाएगी। इस प्रकार हर वर्ष मे लगभग 5 से 10 करोड़ के जितने ज्यादा वीआईपी मूवमेंट होते हैं उसी तरह इन हरामखोरो की कमाई होती है। जब इस हरामखोर जालसाज से जानकारी मांगी गई तो जानकारी तो नही दी गई। दलील मे अपील लगाई गई तो यह घोर भ्रष्ट जालसाज लिखता है कि आप सीधी अपील राज्य सूचना आयोग को कर दो ताकि दो-तीन साल तक उस अपील की सुनवाई नही होगी और यह आराम से यहां से खा पीकर हाथ पोंछ कर निकल जाएगा दूसरी तरफ समाचार पत्र वाले छोटे पत्रकारो को यह हरामखोर किस प्रकार परेशान करते हैं। इसका आप लोगो को अंदाजा नही होगा यहां पिछले 6 महीने से समाचार पत्र भेज रहा हूं उसके पूर्णता के प्रमाणीकरण का पात्र नहीं दे रहा है।

और पैन कार्ड की कॉपी मांग रहा है आखिर आय ही नही तो किस प्रकार का आयकर भुगतान और क्यो आयकर भुगतान फिर पैन मे आपको आधार कार्ड चाहिए और आधार कार्ड से आप जान रहे हैं आधार कार्ड पैन कार्ड से सभी के खातो मे कैसी खुली डकैती डाली जा रही है और यह हरामखोर बहुराष्ट्रीय कंपनियो के रखैले जनता का डाटा इकट्ठा करने के बहाने उन सब कुछ जासूसी करके परेशान करने से भी बाज नही आते हैं इसकी भी सबको जानकारी है और निरंतर समाचार पत्रो मे प्रकाशित होता रहता है।पर यह उसे पर रोक नही लगा पाए और जहां तक मोदी का सवाल है तो उसे बहुराष्ट्रीय कंपनी के रखैले ने जनता के डाटा को बहुराष्ट्रीय कंपनियो को बिकवाने के लिए भी पूरे षड्यंत्र कर दिए।

बिना पैन कार्ड के आपके अखबार स्वीकार नही किए जाएंगे जबकि मेरा समाचार पत्र पिछले 25 सालो से छप रहा है। पर क्योंकि मैं कड़वा सच जो सरकार के विरुद्ध होता है लिख देता हूं इसलिए मुझे आज तक 25 सालो मे कोई भी सरकारी विज्ञापन नही मिला और दूसरे विज्ञापन लेने के इच्छुक होते हैं।

उनको बाकायदा भोपाल जाकर 25 से 50% खर्च करना पड़ता है तब उनको विज्ञापन मिलते हैं। और उनके भुगतान मिलते हैं। वैसे भी आप जानते हैं मध्य प्रदेश का जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय और वहां बैठे आयुक्त से लेकर नीचे तक सारे घोर कितने भ्रष्ट हैं।

कैसे बड़े समाचार पत्रो को लगातार करोड़ो के विज्ञापन देकर उनका मुंह बंद रखते हैं। छोटे पत्रकारो को डराया धमकाया चमकाया जाता है। यह किसी से छुपा नही और जहां तक जनसंपर्क अधिकारी का सवाल है तो वह तो कलेक्टर से भी ऊपर अपने आप को समझता है। क्योंकि उन सब की रिपोर्ट नियमित बनकर वही भेजता है। बेशक इन सारे हरामखोर जालसाजो को उनकी जालसाजी के लिए सत्र एवं जिला न्यायालय मे धारा 120 बी 217 218, 196, 197, 415, 420 आदि मे खड़ा करके सजा दिलवाई जा सकती है।

आखिर इवीएम में मदरबोर्ड क्यों?

पेज 1 का शेष

ताकि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन को आसानी से उसके गुप्त संख्या को मिलकर कही से भी चुनाव परिणाम बदले जा सके और बदले जा रहे हैं पिछले विधानसभा और लोकसभा के चुनाव मे यह पिछले 10 सालो मे सिद्ध हो चुका है। बेशक यह स्थिति एकदम स्पष्ट ना हो जाए इसलिए पांच विधान सभा चुनाव मे दो कम सबसे कमजोर व सत्ताधारी दल के विपरीत जाने वाले राज्यो को छोड़कर तीन राज्यो को जहां जनता आक्रोश व्यक्त नही करेगी और परिणामो को चुपचाप किस्मत मानकर स्वीकार कर लेगी जीत लिया जाता है। जैसा की हर वर्ष देश के विभिन्न राज्य में होने वाली चुनावो मे पिछले 10 साल से हो रहा है। हाल ही मे 19 अप्रैल को हुए 102 लोकसभा सीटो के चुनाव मे भी पूर्व 2014 और 19 की तरह पुनर दोहराने का षड्यंत्र किया जा रहा है। बेशक पूरे देश की जनता मे 90% जनता भाजपा के 10 साल के क्रियाकलापो से भारी बेरोजगारी भुखमरी बीमारी का सामना करने के कारण हैरान परेशान होने के साथ मोदी को हटाना चाहती है।

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के खिलाफ पूरे देश मे माहौल बना पर सर्वोच्च न्यायालय जैसी संस्था मे भी अपने खास न्यायाधीश के पदो पर बैठाकर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के साथ गिरने वाली पर्ची को मतदाता की संतुष्टि के बाद अलग से पेटी मे डालकर दिलवाने की याचिका को भी जानबूझकर मई की तारीख दे दी गईजब तकदो चरणो के मतदान हो चुके होंगे और मतदाता को यदि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की आत्म जागृत हुई और यह अधिकार दे दिया गया तब तक आदि से ज्यादा सीटो पर चुनाव हो जाने के कारण सत्तारूढ़ दल का पलड़ा भारी हो जाएगा। यही कारण है की खुले मे सत्ताधीश दल के नेता जो इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन बदलने से लेकर गायब करने नही रखना क्यो मशीनो मे दिल भी समय तक स्ट्रांग रूम मे बंद रहने के कारण इच्छा अनुसार परिणाम प्राप्त कर लेते हैं खुले मे दबे के साथ बोलते हैं कि जब तक ईवीएम है। भाजपा को कोई नही हरा सकता और यही कारण है की स्वयं प्रधानमंत्री अपने जालसाजी और षड्यंत्र के दम पर खुले मे 400 पर का नारा लगवाते हैं। चाहे जनता मोटे कमीशन पर बहुराष्ट्रीय कंपनियो के मोटे फायदे व उनके व्यावसाय को चलाने के लिए देश पर थोपी गई बेरोजगारी गरीबी भुखमरी बीमारी अशिक्षा महंगाई आदि से कितनी भी परेशान हो? इससे सत्तारूढ़ दल को कोई फर्क नही पड़ता दूसरी तरफ भाजपा की पितृ संस्था का 1930 मे तैयार किया गया एजेंडा की 95% लोगो को रोजगार गरीब भूखा रख रु.1 किलो का गेहूं रु. 2 किलो का चावल का एक वक्त का भजन खिला गुलाम बना सत्ता मे रहने अपने फायदे के लिए उपयोग करते रहो का एजेंडा अक्षर साहब पालन किया जा रहा है नीचे देखो किस प्रकार से 19 अप्रैल को हुए मतदान मे कहां कितना कैसा मतदान हुआ।

हनुमान जी को शिवजी का ग्यारहवां अवतार माना जाता है। हिन्दू मान्यतानुसार रुद्रावतार भगवान हनुमान माता अंजनी और वानर राज केसरी के पुत्र हैं। हनुमान जी की जन्मतिथि पर कई मतभेद हैं लेकिन अधिकतर लोग चैत्र शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को ही हनुमान जयंती के रूप में मानते हैं। हनुमान जी के जन्म का वर्णन वायु- पुराण में किया गया है।

हनुमान जयंती के दिव्य और

अचूक टोटके

वर्ष 2024 में हनुमान जयंती अप्रैल महीने की 23 तारीख को मनाई जाएगी। हनुमान जी की पूजा हनुमान जयंती के दिन प्रातः काल सभी नित्य कर्मों से निवृत्त होने के बाद हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। पूजा में ब्रह्मचर्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। हनुमान जी की पूजा में चन्दन, केसरी, सिन्दूर, लाल कपड़े और भोग हेतु लड्डू अथवा बूंदी रखने की परंपरा है।

हनुमान जयंती के टोटके विशेष फल प्रदान करते हैं। हनुमान जयंती का दिन हनुमानजी और मंगल देवता की विशेष पूजा का दिन है। यह टोटके हनुमान जयंती से आरंभ कर प्रति मंगलवार को करने से मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। इस युग में हनुमानजी की पूजा सबसे जल्दी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली मानी गई है।

- मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति की सेवा हनुमान जयंती के दिन और बाद में महीने में किसी भी एक मंगलवार को करने से आपका मानसिक तनाव हमेशा के लिए दूर हो जाएगा।
- हनुमान जयंती पर और बाद में साल में एक बार किसी मंगलवार को अपने खून का दान करने से आप हमेशा दुर्घटनाओं से बचे रहेंगे।
- 'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः' मंत्र का एक माला जाप हनुमान जयंती व मंगलवार को करना शुभ होता है।
- 5 देसी घी के रोट का भोग हनुमान जयंती पर लगाने से दुश्मनों से मुक्ति मिलती है।
- व्यापार में वृद्धि के लिए हनुमान जयंती को सिंदूरी रंग का लंगोट हनुमानजी को पहनाइए।
- हनुमान जयंती पर मंदिर की छत पर लगाइए लाल झंडा और आकस्मिक संकटों से मुक्ति पाइए।
- तेज और शक्ति बढ़ाने के लिए हनुमान जयंती के दिन हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, सुंदरकांड, रामायण, राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करें।

हनुमान भगवान शिवजी के ११वें रुद्रावतार, सबसे बलवान और बुद्धिमान माने जाते हैं। ज्योतिषीयों के सटीक गणना के अनुसार हनुमान जी का जन्म 1 करोड़ 85 लाख 58 हजार 112 वर्ष पहले चैत्र पूर्णिमा को मंगलवार के दिन चित्र नक्षत्र व मेष लग्न के योग में सुबह 6 .03 बजे हुआ था।

शनि कृपा के लिए आजमाएं ये सात उपाय

शनिवार का व्रत करने वाले शनिभक्त को प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करके शनिदेव की प्रतिमा की विधि-विधान से पूजन करनी चाहिए। ऐसा करने से शनिदेव भक्त पर अपनी कृपा बरसाते है।

» शनिदेव वैसे तो अपनी पूजा मात्र से ही खुश हो जाते है पर आप कुछ अन्य उपाय आजमाकर शनिदेव की कृपा के अनुयायी बन सकते है।

» शनि महाराज की पूजा के पश्चात राहु और केतु की पूजा भी करनी चाहिए।

» शनि भक्त इस दिन शनि मंदिर में जाकर शनि देव को नीले लाजवंती का फूल, तिल, तेल, गुड़ अर्पण करना चाहिए। शनि देव के नाम से दीप प्रज्वलित करना चाहिए।

» शनिदेव की पूजा के पश्चात उनसे अपने अपराधों एवं जाने-अनजाने जो भी आपसे पाप कर्म हुआ हो उसके लिए क्षमा याचना करनी चाहिए। इस दिन शनि भक्तों को पीपल में जल देना चाहिए और पीपल में सूत्र बांधकर सात बार परिक्रमा करनी चाहिए।

» शनि की शांति के लिए नीलम को तभी पहना जा सकता है।

» शनिश्वर के भक्तों को संध्याकाल में शनि मंदिर में जाकर दीप भेंट करना चाहिए और उड़द दाल में खिचड़ी बनाकर शनि महाराज को भोग लगाना चाहिए। शनिदेव का आशीर्वाद लेने के पश्चात आपको प्रसाद स्वरूप खिचड़ी खाना चाहिए।

» काली चीटियों को गुड़ एवं आटा देना चाहिए।

प्रेरक प्रसंग

मेहनत की कमाई

काशी में एक कर्मकांडी पंडित का आश्रम था, जिसके सामने एक मोची बैठता था। वह जूतों की मरम्मत करते वक्त कोई न कोई भजन गाता रहता था लेकिन पंडितजी का ध्यान कभी भी उसके भजन की तरफ नहीं जाता था।

एक बार पंडित जी बीमार पड़ गए और उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। उस समय उनका ध्यान मोची के भजनों की तरफ गया। पंडित जी का मन रोग की तरफ से हटकर भजनों की तरफ चला गया। धीरे-धीरे उन्हें महसूस हुआ, कि जूते गांठने वाले के भजन सुनते-सुनते उनका दर्द कम हो रहा है।

एक दिन एक शिष्य को भेजकर उन्होंने मोची को बुलवाया और कहा 'भाई तुम तो बहुत अच्छा गाते हो। मेरा रोग बड़े-बड़े वैद्यों के इलाज से भी ठीक नहीं हो रहा था लेकिन तुम्हारे भजन सुनकर मैं ठीक होने लगा हूं।'

उन्होंने उसे सौ रुपये देते हुए कहा 'तुम इसी तरह गाते रहना।' रुपये पाकर मोची बहुत खुश हुआ। लेकिन पैसा पाने के बाद से उसका मन कामकाज से हटने लगा। वह भजन गाना भूल गया। दिन-रात यही सोचने लगा कि रुपये को संभालकर कहां रखे। काम में लापरवाही के कारण उसके ग्राहक भी उस पर नाराज रहने लगे।

धीरे-धीरे उसकी दुकानदारी चौपट होने लगी। उधर भजन बंद होने से पंडित जी का ध्यान फिर रोग की तरफ जाने लगा। उनकी हालत फिर बिगड़ने लगी। एक दिन अचानक मोची पंडित जी के पास पहुंचकर बोला 'आप अपने पैसे वापस रख लीजिए।' पंडित जी ने पूछा 'क्यों, क्या किसी ने तुमसे कुछ कहा?' मोची बोला 'कहा तो नहीं, लेकिन इन पैसों को अपने पास रखूंगा तो आप की तरह मैं भी बिस्तर पकड़ लूंगा। इसी रुपये ने मेरा जीना हराम कर दिया। मेरा गाना भी छूट गया। काम में मन नहीं लगता, इसलिए कामकाज ठप हो गया। मैं समझ गया कि अपनी मेहनत की कमाई में जो सुख है, वह पराये पैसों में नहीं है। आपके धन ने तो परमात्मा से भी नाता तुड़वा दिया।

अगर आप भी खाते हैं रोज पपीता तो हो जायें सावधान

पपीता एक ऐसा फल है, जो साल के बारह महीने पाया जाता है। नाश्ते में इस फल का सेवन करने से आपको कई फायदे होंगे। पपीते में कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन B9, पोटेशियम और मैग्नीशियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जो सेहत के लिए फायदेमंद है। पपीते में पपेन नाम का एंजाइम के साथ हेल्दी-एंटीऑक्सीडेंट का बेहतरीन स्रोत पाया जाता है जिसे हम कैरोटेनॉइड्स कहते हैं। पपीता का सेवन दिल की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है। लेकिन क्या आप जानते हैं कुछ बीमारियों से पीड़ित लोग इस फल का बिलकुल भी सेवन नहीं कर सकते हैं। चलिए हम आपको बताते हैं कि किन बीमारियों के पीड़ित के लिए ये फल खतरनाक है।

एसिडिटी बढ़ाए

गैस को दूर करने के लिए अक्सर लोग पपीता रोज़ खाते हैं लेकिन आप जानते हैं कि पपीता आपके पाचन को सुधारने के बजाए आपका पाचन बिगाड़ देता है। इसका लगातार सेवन आपकी सेहत को बिगाड़ सकता है।

डायरिया के हो सकते हैं शिकार

कुछ लोग पाचन दुरुस्त करने के लिए रोजाना पपीता खाते हैं। आप जानते हैं कि रोजाना पपीता का सेवन आपको डायरियां की बीमारी कर सकता है। आप पपीता का सेवन पाचन को ठीक करने के लिए करते हैं तो रोज नहीं खाएं ये डायरिया का कारण बन सकता है।

प्रेग्नेंसी में जहर है पपीता

प्रेग्नेंट महिलाएं भूलकर भी पपीता का सेवन नहीं करें। पपीता गर्भपात का कारण बन सकता है। कई रिसर्च में ये बात सामने आई है कि प्रेग्नेंसी के दौरान अगर मां पपीता खाती है तो उसके गर्भपात होने के चांस बढ़ने लगते हैं।

गर्मी में बच्चों को पिलाएं ये हेल्दी ड्रिंक्स रहेंगे पूरे दिन एनर्जेटिक और हाइड्रेटिड

गर्मियों में ये सुनिश्चित करें कि आपका बच्चा पूरे दिन सक्रिय रहता है और डिहाइड्रेशन को रोकता है। इसके लिए उन्हें पौष्टिक और ताजा भोजन और पेय प्रदान करना महत्वपूर्ण है। ऐसे में आज हम आपके बच्चे को गर्मियों में एनर्जेटिक बनाएं रखने के लिए कुछ ड्रिंक्स बताने जा रहे हैं जिनके सेवन से आपका बच्चा गर्मी को मात देकर पूरे दिन एक्टिव बना रहेगा, तो चलिए जानते हैं।

छाछ

गर्मियों के लिए एक बढ़िया पेय है छाछ। इसके लिए आप 1 भाग दही लीजिए और इसमें 4 भाग पानी डाल कर अच्छी तरह मथ लीजिए। फिर धनिया पत्ती डालें, एक चुटकी नमक डालें, जीरा और हींग के साथ तड़का लगाएं और बस आपकी छाछ तैयार है।

नारियल पानी

यह गर्मियों के लिए आदर्श आहार है। यह तुरन्त हाइड्रेट करता है, एक प्राकृतिक चिलर के रूप में कार्य करता है, और इसमें खनिजों और ट्रेस तत्वों का खजाना होता है जो आपको इंस्टेंट एनर्जी प्रदान कर सकता है। प्रतिदिन 1 गिलास नारियल पानी गर्मियों की परेशानियों को दूर रख सकता है।

नींबू पानी

नींबू पानी का एक दैनिक गिलास आपके बच्चे को आवश्यक इलेक्ट्रोलाइट्स और पानी को भरने में मदद कर सकता है। आप नींबू पानी में पुदीने के पत्ते, जीरा पाउडर, थोड़ा सा सेंधा नमक और कुछ भीगे हुए चिया बीज आदि जैसी सामग्री मिला पी सकते हैं। इससे नींबू पानी का स्वाद अच्छा हो जाएगा।

सत्तू

सत्तू को भुनी हुई चना दाल से तैयार किया जाता है। ये एक प्राकृतिक शीतलक होता है इसके साथ ही ये प्रोटीन का भी एक अच्छा स्रोत है। इसके लिए आप सिर्फ एक गिलास सत्तू ड्रिंक में कुछ किशमिश और चीनी या गुड़ मिलाकर दें। इससे आपके बच्चे में पूरे दिन के लिए पर्याप्त ऊर्जा होगी।

तरबूज

सबसे रोमांचक मौसमी फलों में से एक, यह पानी से भरपूर, पोषक तत्वों से भरपूर फल गर्मियों के लिए मेन्यू में होना चाहिए। अगर बच्चा तरबूज खाने में नखरे करता है, तो इसे कुछ पुदीने की पत्तियों के साथ मिलाकर जूस बनाकर सेवन करें।

बढ़ते संक्रमण के बीच लक्षणों पर दें गंभीरता से ध्यान

पिछले एक महीने से देश में कोरोना के संक्रमण के कारण धीरे-धीरे ही सही स्थिति बिगड़ती हुई देखी जा रही है। जनवरी-फरवरी की शुरुआत में जहां हालात एकदम कंट्रोल में लग रहे थे, वहीं मार्च में कोरोना ने काफी तेज रफ्तार पकड़ ली है। पिछले तीन दिनों से लगातार देश में तीन हजार के करीब मामले सामने आ रहे हैं। आंकड़े बताते हैं कि मार्च के महीने में देश में संक्रमण के कारण मृत्यु के आंकड़ों में 114 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। कोरोना मामलों के विशेषज्ञ कहते हैं, देश में कोरोना के इस बढ़ते संक्रमण के लिए ओमिक्रॉन के सब-वैरिएंट XBB.1.16 को कारण माना जा रहा है। इसमें देखे गए म्यूटेशन इसे अन्य ओमिक्रॉन वैरिएंट्स से अधिक संक्रामकता वाला बनाते हैं। हालांकि इससे उन लोगों में गंभीर रोग विकसित होने का खतरा भी हो सकता है जिनकी इम्युनिटी कमजोर है या फिर जो कोमोरबिडिटी का शिकार हैं। आइए जानते हैं कि इस वैरिएंट में किस प्रकार के गंभीर लक्षण विकसित होने का खतरा हो सकता है?

वैरिएंट के कारण होने वाली दिक्कतें

कोरोना के इस नए वैरिएंट से संक्रमण के कारण फिलहाल लोगों में गंभीर रोगों की स्थिति नहीं देखी जा रही है। अध्ययनों में पाया गया है कि देश में दूसरी लहर का कारण बनने वाले डेल्टा वैरिएंट की तुलना में इसके लक्षण काफी हल्के हैं। ये लक्षण अक्सर घर पर रहकर ठीक भी हो जा रहे हैं। संक्रमितों में कुछ समय तक बुखार और नाक बंद होना, गले में खराश, सिरदर्द, शरीर में दर्द, थकान जैसी दिक्कतें हो सकती हैं।

संक्रमण के लक्षण और इसका खतरा

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, कोरोना के इन नए वैरिएंट्स के कारण गंभीर रोगों का खतरा कम देखा जा रहा है। वैक्सीनेशन की दर ने इस तरह के जोखिम को कम कर दिया है। पर कोरोना वायरस श्वसन रोग है जो फेफड़ों को प्रभावित कर सकता है। इसके कारण लॉन्ग कोविड संक्रमण का खतरा बना हुआ है। ऐसे में कुछ लोगों में संक्रमण की स्थिति गंभीर रोग को बढ़ावा दे सकती है। बुजुर्ग, कॉमरेडिटी वाले लोगों में इसका खतरा अधिक होता है। गर्भवती महिलाओं में संक्रमण की स्थिति का शिशु की सेहत पर असर पड़ने की भी प्रमाण मिले हैं।

कोविड प्रोटोकॉल का करें पालन

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, कोविड प्रोटोकॉल का पालन करना न सिर्फ आपको, बल्कि कोरोना के गंभीर रोगों के खतरे वाले लोगों को भी संक्रमण से बचाने में सहायक हो सकता है। इसके लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें।मास्क जरूर पहनें, खासकर भीड़-भाड़ वाले इलाकों में।हैंड सैनिटाइजर का इस्तेमाल करते रहें।कोरोना से सुरक्षित रहने के लिए वैक्सीनेशन जरूर कराएं।सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते रहें।

संक्रमण का बढ़ना चिंताजनक

कोरोना मामलों के विशेषज्ञ कहते हैं, नए वैरिएंट्स के कारण गंभीर लक्षण जैसे निमोनिया, स्वाद-गंध न आने की समस्या फिलहाल नहीं देखी गई है। गंभीर रोग के जोखिम कारक वालों में सांस की दिक्कतें हो सकती हैं, कुछ लोगों को अस्पताल में भर्ती होना पड़ सकता है पर ऐसे मामले बहुत कम हैं।बूस्टर वैक्सीनेशन ने कोरोना की गंभीरता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, पर इन नए वैरिएंट्स की इम्यून स्केप क्षमता ऐसे लोगों को भी संक्रमित कर सकती है। इसके लिए सभी लोगों को सुरक्षात्मक उपाय करते रहना आवश्यक है।

साप्ताहिक समय माया

ईरान पर इजरायल ने किया हमला

पेज 1 का शेष

प्रारंभिक रिपोर्टों में कहा गया है कि कोई हमला नहीं हुआ है। बाद में, राज्य टीवी पर एक विश्लेषक ने कहा कि हवाई सुरक्षा ने 'घुसपैठियों' द्वारा लॉन्च किए गए ड्रोन को मार गिराया है।

आधिकारिक मीडिया आउटलेट्स ने लघु ड्रोन की मज़ाकिया तस्वीरें पोस्ट की हैं।

इजराइल पिछले शनिवार को ईरान के हमले का जवाब दे रहा था, वर्षों की दुश्मनी और धमकियों के बावजूद 1979 में इस्लामिक गणराज्य की स्थापना के बाद यह पहली बार था कि ईरान ने अपने क्षेत्र से इज़राइल पर सीधा हमला किया था।

उस हमले के दौरान ईरान ने 300 से अधिक मिसाइलें और ड्रोन लॉन्च किए थे। उनमें से लगभग सभी को अमेरिका, ब्रिटेन और जॉर्डन की सेनाओं द्वारा बढ़ाए गए इज़राइल की हवाई सुरक्षा द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

ईरानियों ने अपने इरादे स्पष्ट कर दिए थे, जिससे इज़राइल और उसके सहयोगियों को खुद को तैयार होने का समय मिल गया, और तुरंत न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र में एक बयान जारी किया कि उनका प्रतिशोध समाप्त हो गया था।

श्री बिडेन ने इज़राइल से 'जीत हासिल करने' का आग्रह किया लेकिन इज़राइल ने जोर देकर कहा कि वह जवाबी हमला करेगा।

शुरू से ही, इस संकट ने दिखाया है कि ईरान और इज़राइल एक-दूसरे को कितनी बुरी तरह समझते हैं। दोनों ने गलत आकलन

किया, जिससे संकट गहरा गया.

ईरान के नेता इजराइल के अस्तित्व के विरोधी हैं

ऐसा प्रतीत होता है कि इज़राइल को यह विश्वास था कि जब ईरान ने दमिश्क में जनरल मोहम्मद रज़ा ज़ाहेदी की हत्या की तो ईरान आक्रोश से अधिक तीव्र प्रतिक्रिया नहीं देगा।

इसके हवाई हमले ने दमिश्क में ईरानी राजनयिक परिसर में वाणिज्य दूतावास को नष्ट कर दिया, जिसमें एक अन्य जनरल सहित छह अन्य लोग मारे गए।

ईरान ने घोषणा की कि वह इस हमले को अपने क्षेत्र पर हमला मानता है। इज़राइल ने दावा किया कि परिसर राजनयिक सम्मेलनों द्वारा संरक्षित नहीं था क्योंकि ईरानी इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने उन्हें एक सैन्य चौकी में बदल दिया था। ईरान, न ही वास्तव में इज़राइल के पश्चिमी सहयोगियों ने इमारत की स्थिति के एकतरफा पुनर्वर्गीकरण को स्वीकार नहीं किया - और तेहरान में सरकार को उम्मीद थी कि इज़राइल अपनी प्रतिक्रिया के बाद एक रेखा खींचने के लिए सहमत होगा।

यह एक और गंभीर ग़लत अनुमान था।

अगर इस्फ़हान पर हमले के बाद और हमले नहीं किए गए तो तात्कालिक तनाव कम हो जाएगा.

रातोरात जो हुआ वह इजरायली प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की प्रतिक्रिया देने का प्रयास हो सकता है, श्री बिडेन को पहले से कहीं अधिक अलग किए बिना।

यदि यह बात है, तो एक और सवाल यह है कि क्या यह इज़राइल के युद्ध मंत्रिमंडल में पूर्व जनरलों के लिए पर्याप्त होगा, जिनके बारे में माना जाता है कि वे अपने दुश्मनों को रोकने के लिए इज़राइल की क्षमता को बहाल करने के लिए एक मजबूत प्रतिक्रिया चाहते हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतामार बेन गिवर ने कहा कि जब ईरान ने हमला किया तो इजरायलियों को 'उन्मत्त होने' की जरूरत थी। एक सोशल मीडिया पोस्ट में उन्होंने इस्फ़हान हमले को 'कमजोर' बताया।

पश्चिमी सरकारों की राय में, इस क्षेत्र के लिए सबसे अच्छा विकल्प ईरान और इज़राइल दोनों के लिए गाथा के तहत एक रेखा खींचना है।

हालाँकि, भले ही यह इस संकट के इस चरण का अंत है, नई मिसालें कायम हुई हैं।

ईरान ने इजराइल पर सीधा हमला बोला है और इजराइल ने इसका जवाब अपने सीधे हमले से दिया है,

यह उस क्षेत्र में एक बदलाव है जिसे अक्सर ईरान और इज़राइल के बीच लंबे संघर्ष को नियंत्रित करने वाले 'खेल के नियम' के रूप में जाना जाता है।

दोनों देशों के बीच लंबे समय से चला आ रहा गुप्त युद्ध अब परदे से बाहर आ गया है.

इस प्रक्रिया में ईरान और इज़राइल ने दिखाया है कि एक-दूसरे पर इतना ध्यान देने के बावजूद, वे एक-दूसरे के इरादों को समझने में अच्छे नहीं हैं।

दुनिया के अत्यधिक दहनशील हिस्से में, यह उत्साहजनक नहीं है। ईरान के विदेश मंत्री ने दमिश्क में ईरानी राजनयिक परिसर पर हमले पर बयान जारी नहीं करने के लिए अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस की आलोचना की. उन्होंने व्हाइट हाउस पर इजराइल की कार्रवाई को हरी झंडी देने का आरोप लगाया. ईरान के जवाबी हमले के बाद से इज़रायल तिलमिलाया हुआ है. इज़रायल लगातार UN में इस मुद्दे को उठा रहा है. ईरान अपनी ओर से जवाब में कह चुका है कि उसने ये ऑपरेशन अपनी आत्मरक्षा में किया था. अब फिर से ईरान के विदेश मंत्री होसैन अमीर-अब्दुल्लाहियन ने इजरायल को ईरानी हितों को निशाना बनाकर कोई भी सैन्य कार्रवाई करने के खिलाफ चेतावनी दी.

होसैन अमीर-अब्दुल्लाहियन ने कहा कि ईरान ने अपने 'रक्षा और जवाबी कदम' पूरे कर लिए हैं. अंतरराष्ट्रीय समुदाय से आग्रह किया है कि वह इजरायल को ईरान के खिलाफ कोई भी सैन्य अभियान चलाने से रोके.

ईरान की वैध रक्षा और जवाबी कार्रवाई पूरी

यूएनएससी में मध्य पूर्व की स्थिति पर चर्चा के दौरान, अमीर-अब्दुल्लाहियन ने कहा, 'ईरान की वैध रक्षा और जवाबी कार्रवाई पूरी हो चुकी है. इसलिए, इजरायली शासन को हमारे केंद्रों, संपत्तियों और हितों के खिलाफ किसी भी आगे के सैन्य दुस्साहस को रोकने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए. निश्चित रूप से, इज़रायली शासन द्वारा बल के किसी भी उल्लंघन की स्थिति में, ईरान उसे उचित प्रतिक्रिया देने के अपने अधिकार में थोड़ा भी संकोच नहीं करेगा.

ईरानी राजनयिक परिसर पर मिसाइल हमला

ईरान ने कहा कि इज़राइल ने 1 अप्रैल को दमिश्क में ईरानी राजनयिक परिसर पर मिसाइल हमला किया. इज़राइल की यह कार्रवाई 'संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय कानून के चार्टर और वियना कन्वेंशन का स्पष्ट उल्लंघन है.' इसलिए इसकी कड़ी निंदा की जाती है.

अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस की आलोचना

ईरान के विदेश मंत्री ने कहा, 'अफसोस की बात है कि सुरक्षा परिषद ने पिछले महीनों के दौरान हमारे अधिकारी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की थी. ईरान के हितों, केंद्रों और आधिकारिक सैन्य सलाहकारों पर इजरायली शासन द्वारा आगे के हमलों को रोकने के लिए बार-बार अनुरोध किया था. इस अवैध हमले के जवाब में संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस के दुर्भाग्यपूर्ण और पूरी तरह से गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार के कारण, वे साधारण निंदा वाला एक साधारण बयान भी जारी करने में विफल रहे.'

आईपीएल सट्टा खेलकर बर्बाद हो रहे युवा, जिम्मेदार मौन

इन दिनों करोड़ों का ऑनलाइन आईपीएल सट्टा खिलाया जा रहा है। आईपीएल में सट्टा का दांव लगाने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। सट्टा में बर्बाद हुए युवक अपराध की ओर बढ़ रहे हैं, यह सब जानने के बावजूद इस पर रोक लगाने की दिशा में कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है।

युवाओं में इन दिनों आईपीएल का खुमार सिर चढ़कर बोल रहा है। आईपीएल के जरिए युवा रातों रात मालामाल होने के लालच में अपना भविष्य तबाह कर रहे हैं। शहर में कई जगह सुबह 9 बजे से रात 12 बजे तक हाईटेक सटटा खिलाया जा रहा है। सटटा की लत में छात्र एवं व्यापारी ब्याज पर रूपए लेकर आईपीएल में टीमों की हार-जीत पर दांव लगा रहे हैं। यहां तक कि लोग फोन से ही सटटा का दांव लगा देते है। इस हाईटेक तरीके से दौलत कमाने के चक्कर में महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। वे कई जगह से मोबाइल पर सटटे की बुकिंग ले रही हैं, कई महिलाएं तो खुद सट्टे से दौलत कमाने के लालच में दांव लगा रही हैं। इन दिनों किसान भी अपनी फसल बेचकर जो रूपया आ रहा है इसी धनराशि को किसान परिवारों के बिगड़ैल युवक आईपीएल सट्टे में उड़ा रहे हैं। सट्टा की लत में फंसकर कर्ज में डूबे युवा इससे उबरने के लिए अपराध की ओर मुड़ रहे हैं। दरअसल सटटे में हारे युवाओं पर आईपीएल सटोरियों का कर्ज चुकाने का दबाव इतना अधिक बढ़ जाता है कि वे दबाव से परेशान होकर अपनी तक दे देते हैं। नगर व ग्रामीण क्षेत्रों में कई परिवार सटटे के चक्कर में बर्बाद हो चुके हैं और कई परिवार बर्बादी के कगार पर हैं। लोगों का कहना है कि नगर में जारी सटटे के बारे में भलीभांति वाकिफ होने के बावजूद

पुलिस इस नाजायज धंधे की अनदेखी कर रही है, ये समझ से परे है। इस मामले में अब पुलिस पर भी अंगुलियां उठने लगी हैं।

हाईटेक तरीके से लगाते हैं दांवः

सूत्रों की माने तो शहर में इन दिनों आईपीएल सट्टा खिलाने वाले जो लोग हैं, वे कभी छोटा-मोटा व्यापार करते थे। आज वही लोग मोबाइल पर टोकन देकर लाखों रुपये का सट्टा लगवा रहे हैं। बताते है कि जो लोग सट्टा में दांव लगाते हैं, वे सटोरियों के मोबाइल पर लाखों रुपये का दांव लगाकर टोकन ढलवा लेते हैं। जिससे वे आसानी से आईपीएल में अपने मनचाहे खिलाड़ी पर सट्टा का दांव लगाते हैं।

सटोरिये सीधे महानगरों से संपर्क करके मधु, मिलन, कल्याण के भाव लेकर दांव लगा रहे हैं, वहीं तीन पत्ती इक्का, दुर्री, तीया दस अंकों का अलग ही खेल खेला जा रहा है। आईपीएल सटोरियों पर कोई भी बड़ी कार्रवाई न होने से नगर में सट्टा का संजाल और तेजी से फैल रहा है।

युद्ध का पर्यावरणीय प्रभाव

युद्ध के पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन युद्ध के आधुनिकीकरण और पर्यावरण पर इसके बढ़ते प्रभावों पर केंद्रित है। अधिकांश दर्ज इतिहास में झुलसी हुई पृथ्वी पद्धतियों का उपयोग किया गया है। हालाँकि, आधुनिक युद्ध के तरीके पर्यावरण पर कहीं अधिक तबाही मचाते हैं। रासायनिक हथियारों से लेकर परमाणु हथियारों तक युद्ध की प्रगति ने पारिस्थितिक तंत्र और पर्यावरण पर तनाव बढ़ा दिया है। युद्ध के पर्यावरणीय प्रभाव के विशिष्ट उदाहरणों में प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, वियतनाम युद्ध, रवांडा गृह युद्ध , कोसोवो युद्ध और खाड़ी युद्ध शामिल हैं।

वियतनाम युद्ध के दौरान यूसी-123बी प्रदाता विमान द्वारा ऑपरेशन रेंच हैंड का हिस्सा, डिफोलिएंट स्प्रे रन

वियतनाम युद्ध में रासायनिक एजेंटों के कारण महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव पड़े, जिनका उपयोग सैन्य रूप से महत्वपूर्ण वनस्पति को नष्ट करने के लिए किया गया था। शत्रुओं को नागरिक आबादी में घुल-मिलकर या घनी वनस्पतियों और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र को निशाना बनाने वाली सेनाओं का विरोध करके अदृश्य रहने में एक फायदा मिला।

अमेरिकी सेना ने जंगलों को नष्ट करने, सैन्य स्थलों की सीमाओं पर विकास को साफ करने और दुश्मन की फसलों को खत्म करने के लिए '20 मिलियन गैलन से अधिक जड़ी-बूटीनाशकों .... का इस्तेमाल किया।'

जबकि रासायनिक एजेंटों ने अमेरिका को एक फायदा दिया युद्धकालीन प्रयासों में, वनस्पति पुनर्जीवित होने में असमर्थ थी और इसने अपने पीछे नंगी मिट्टी छोड़ दी जो छिड़काव के वर्षों बाद भी मौजूद थी।

न केवल वनस्पति प्रभावित हुई, बल्कि वन्य जीवन भी प्रभावित हुआ: '1980 के दशक के मध्य में वियतनामी पारिस्थितिकीविदों द्वारा किए गए एक अध्ययन में केवल 24 का दस्तावेजीकरण किया गया। छिड़काव वाले जंगलों और परिवर्तित क्षेत्रों में पक्षियों की प्रजातियाँ और स्तनधारियों की 5 प्रजातियाँ मौजूद हैं, जबकि अक्षुण्ण जंगल में 145-170 पक्षी प्रजातियाँ और 30-55 प्रकार के स्तनधारी हैं।'

इन जड़ी-बूटियों के अनिश्चित दीर्घकालिक प्रभाव अब हो रहे हैं इसकी खोज आर्द्रभूमि प्रणालियों में निवास स्थान के क्षरण और हानि के माध्यम से संशोधित प्रजातियों के वितरण पैटर्न को देखकर की गई, जिसने मुख्य भूमि से अपवाह को अवशोषित किया।

वियतनाम युद्ध में जंगलों का विनाश, स्वीडिश प्राइम सहित, पारिस्थितिक विनाश के सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले उदाहरणों में से एक है मंत्री ओलोफ़ पाल्मे , वकील, इतिहासकार और अन्य शिक्षाविद।

पूरे अफ्रीका में, राष्ट्रीय उद्यानों और अन्य संरक्षित क्षेत्रों में वन्यजीवों की आबादी में गिरावट का युद्ध एक प्रमुख कारक रहा है। हालाँकि, रवांडा के अकागेरा नेशनल पार्क और मोज़ाम्बिक के गोरोंगोसा नेशनल पार्क सहित पारिस्थितिक बहाली की बढ़ती पहलों से पता चला है कि विनाशकारी संघर्षों के बाद भी वन्यजीव आबादी और पूरे पारिस्थितिक तंत्र का सफलतापूर्वक पुनर्वास किया जा सकता है। विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया है कि ऐसे प्रयासों की सफलता के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान आवश्यक है।

रवांडा नरसंहार के कारण लगभग 800,000 तुत्सी और उदारवादी हुतस मारे गए। युद्ध ने कुछ ही हफ्तों में रवांडा से भागकर तंजानिया और अब आधुनिक कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के शरणार्थी शिविरों में बड़े पैमाने पर प्रवासन किया ।

शरणार्थी शिविरों में लोगों का यह बड़ा विस्थापन आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र पर दबाव डालता है । आश्रयों के निर्माण और खाना पकाने की आग पैदा करने के लिए लकड़ी उपलब्ध कराने के लिए जंगलों को साफ किया गया:

'ये लोग कठोर परिस्थितियों से पीड़ित थे और प्राकृतिक संसाधनों पर एक महत्वपूर्ण खतरा प्रभाव डालते थे।'

संघर्ष के परिणामों में राष्ट्रीय उद्यानों और अभ्यारण्यों का क्षरण भी शामिल था। एक और बड़ी समस्या यह थी कि रवांडा में जनसंख्या दुर्घटना के कारण कर्मियों और पूंजी को देश के अन्य हिस्सों में स्थानांतरित कर दिया गया, जिससे वन्यजीवों की रक्षा करना कठिन हो गया।

फ्रांस में सोम्मे की लड़ाई इतनी विनाशकारी थी कि क्षति आज भी मौजूद है। सुरक्षा के लिए काफी गहराई तक खोदी गई खाइयों के बीच 250,000 एकड़ कृषि भूमि पूरी तरह से बर्बाद हो गई, साथ ही आई-131 विकिरण के कारण भारी सैन्य आग और विभिन्न प्रकार के हथियारों से बचे अवशेष भी नष्ट हो गए,

जिसके लिए कोई मौका नहीं था। किसी भी प्रकार के कृषि जीवन के लिए पर्यावरण।

1916 के जुलाई से नवंबर तक चले युद्ध के कारण फ्रांस में लगभग 500,000 एकड़ जंगल भी नष्ट हो गए थे।

इसका असर जंगली यूरोपीय भैंसों और अन्य जानवरों पर भी पड़ेगा, क्योंकि भूमि नहीं थी पशुधन की किसी भी प्रकार की फसल के लिए उपयुक्त, वे विलुप्त होने के करीब हो जाते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध ने उत्पादन में भारी वृद्धि की, वस्तुओं के उत्पादन और परिवहन का

सैन्यीकरण किया, और कई नए पर्यावरणीय परिणाम पेश किए, जिन्हें आज भी देखा जा सकता है। द्वितीय विश्व युद्ध में मनुष्यों, जानवरों और सामग्रियों का व्यापक विनाश हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के युद्धोत्तर प्रभाव, पारिस्थितिक और सामाजिक दोनों, संघर्ष समाप्त होने के दशकों बाद भी दिखाई दे रहे हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, विमान बनाने के लिए नई तकनीक का उपयोग किया गया, जिसका उपयोग हवाई हमले करने के लिए किया गया। युद्ध के दौरान, विमानों का उपयोग विभिन्न सैन्य ठिकानों तक संसाधनों को ले जाने और दुश्मन, तटस्थ और मित्रवत लक्ष्यों पर बम गिराने के लिए किया जाता था। इन गतिविधियों ने आवासों को नुकसान पहुँचाया।

बंकर को खाइयों के बीच में भूनना, जमीन पर पड़ी सभी गोलियों से बचे मिट्टी और रसायनों में भिगोना।

वन्य जीवन की तरह, पारिस्थितिकी तंत्र भी ध्वनि प्रदूषण से ग्रस्त है जो सैन्य विमानों द्वारा उत्पन्न होता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, विमान ने विदेशी वस्तुओं के परिवहन के लिए एक वेक्टर के रूप में काम किया, जिससे खरपतवार और खेती की प्रजातियों को विमान लैंडिंग स्ट्रिप्स के माध्यम से समुद्री द्वीप पारिस्थितिक तंत्र में लाया गया, जिनका उपयोग प्रशांत थिएटर में संचालन के दौरान ईंधन भरने और स्टेजिंग स्टेशनों के रूप में किया गया था ।

युद्ध से पहले, यूरोप के चारों ओर अलग-थलग द्वीपों में बड़ी संख्या में स्थानिक प्रजातियाँ निवास करती थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, हवाई युद्ध का जनसंख्या की गतिशीलता में उतार-चढ़ाव पर भारी प्रभाव पड़ा।

अगस्त 1945 में, लगभग चार वर्षों तक द्वितीय विश्व युद्ध लड़ने के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर परमाणु बम गिराया। हिरोशिमा पर बमबारी के बाद पहले नौ सेकंड में लगभग 70,000 लोग मारे गए, जो टोक्यो पर विनाशकारी ऑपरेशन मीटिंगहाउस हवाई हमले के परिणामस्वरूप मरने वालों की संख्या के बराबर था। हिरोशिमा पर बमबारी के तीन दिन बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका ने औद्योगिक शहर नागासाकी पर दूसरा परमाणु बम गिराया, जिसमें तुरंत 35,000 लोग मारे गये।

परमाणु हथियारों से विनाशकारी स्तर की ऊर्जा और रेडियोधर्मी कण निकले। एक बार बमों के विस्फोट के बाद तापमान लगभग 3980 डिग्री सेल्सियस / 7200 डिग्री फ़ारेनहाइट तक पहुंच गया।

इतने अधिक तापमान के कारण, प्रभाव क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे और मानव जीवन के साथ-साथ सभी वनस्पतियाँ और जीव-जंतु नष्ट हो गए।

जो रेडियोधर्मी कण छोड़े गए, उससे बड़े पैमाने पर भूमि और पानी प्रदूषित हुआ।

शुरुआती विस्फोटों ने सतह के तापमान को बढ़ा दिया और कुचलने वाली हवाएं पैदा की, जिससे उनके रास्ते में आने वाले पेड़ और इमारतें नष्ट हो गईं।

युद्ध के दौरान लड़ाई के परिणामस्वरूप यूरोपीय जंगलों पर दर्दनाक प्रभाव पड़ा। युद्ध क्षेत्रों के पीछे, लड़ाई के लिए रास्ते साफ करने के लिए कटे हुए पेड़ों की लकड़ी हटा दी गई। युद्ध क्षेत्र में उजड़े जंगलों को शोषण का सामना करना पड़ा।

भारी खतरनाक रसायनों का उपयोग पहली बार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शुरू किया गया था।

रसायनों के दीर्घकालिक प्रभाव उनकी संभावित दृढ़ता और भंडारित हथियारों वाले देशों के खराब निपटान कार्यक्रम दोनों के परिणामस्वरूप होते हैं।

प्रथम विश्व युद्ध (WW I) के दौरान , जर्मन रसायनज्ञों ने क्लोरीन गैस और मस्टर्ड गैस विकसित की। इन गैसों के विकास के कारण कई लोग हताहत हुए और युद्ध के मैदानों और उसके आस-पास की भूमि जहरीली हो गई। बाद में द्वितीय विश्व युद्ध में, रसायनज्ञों ने और भी अधिक हानिकारक रासायनिक बम विकसित किए, जिन्हें बैरल में पैक किया गया और सीधे महासागरों में जमा किया गया।

समुद्र में रसायनों के निपटान से धातु-आधारित कंटेनरों के क्षरण और जहाज की रासायनिक सामग्री के समुद्र में चले जाने का खतरा रहता है।

समुद्र में रासायनिक निपटान के माध्यम से, प्रदूषण पारिस्थितिक तंत्र के विभिन्न घटकों में फैल सकता है जो समुद्री और स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचा सकता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र न केवल रासायनिक संदूषकों से क्षतिग्रस्त हुआ था, बल्कि नौसेना के जहाजों के मलबे से भी क्षतिग्रस्त हुआ था, जिससे पानी में तेल का रिसाव हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के जहाज़ों के मलबे के कारण अटलांटिक महासागर में तेल संदूषण 15 मिलियन टन से अधिक होने का अनुमान है।

तेल के रिसाव को साफ करना मुश्किल होता है और इसे साफ करने में कई साल लग जाते हैं। आज तक, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुए नौसैनिक जहाजों के मलबे से तेल के निशान अटलांटिक महासागर में पाए जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, बाल्टिक सागर में बड़ी मात्रा में गैर-विस्फोटित युद्ध सामग्री शामिल है, जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध की भूमि और नौसैनिक खदानें भी शामिल हैं।

ये अविस्फोटित हथियार न केवल नौका यातायात, बल्कि समुद्री जीवन के लिए भी खतरा पैदा करते हैं। जब इन हथियारों को समुद्र के नीचे विस्फोट किया जाता है, चाहे अनजाने में या जानबूझकर उन्हें साफ़ करने के प्रयास में, कई किलोमीटर दूर समुद्री जीवों को सीधे चोट पहुंचाई जा सकती है।

अधिक दूरी पर स्थित जीवों को अभी भी चोट का अनुभव हो सकता है, जैसे कि उनकी श्रवण सीमा को नुकसान, जो कुछ मामलों में अपरिवर्तनीय है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बाल्टिक और पश्चिमी समुद्र में एक लाख पैंसठ हजार नौसैनिक खदानें लगाई गईं, जिनमें से अनुमानतः 15-30% अभी भी सक्रिय हैं।

युद्ध के दौरान रसायनों के उपयोग ने रासायनिक उद्योगों के पैमाने को बढ़ाने में मदद की और सरकार को वैज्ञानिक अनुसंधान का मूल्य दिखाने में भी मदद की। युद्ध के दौरान रासायनिक अनुसंधान के विकास से युद्ध के बाद कृषि कीटनाशकों का विकास भी हुआ।

युद्ध के बाद के वर्षों में कीटनाशकों का निर्माण लाभकारी रहा। द्वितीय विश्व युद्ध के पर्यावरणीय प्रभाव बहुत गंभीर थे, जिसने उन्हें शीत युद्ध में और आज भी देखा जा सकता है। संघर्ष, रासायनिक संदूषण और हवाई युद्ध के प्रभाव वैश्विक वनस्पतियों और जीवों की आबादी में कमी के साथ-साथ प्रजातियों की विविधता में भी कमी लाते हैं।

1946 में, जर्मनी के अमेरिकी क्षेत्र में, संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना ने सरकार को उन लोगों के लिए आवास और रोजगार तैयार करने की सलाह दी, जिन्हें उनके शहरों से बाहर निकाल दिया गया था। इसका उत्तर एक विशेष उद्यान कार्यक्रम था जो लोगों को रहने के लिए नई भूमि प्रदान करेगा। इसमें लोगों के लिए आवश्यक भोजन उपलब्ध कराने के लिए भूमि भी शामिल थी। फिर अच्छी मिट्टी के लिए जंगलों का सर्वेक्षण किया गया जो फसल उत्पादन के लिए उपयुक्त थी। इसका मतलब था कि खेतों और आवास के लिए भूमि बनाने के लिए जंगलों को काटा जाएगा। वानिकी कार्यक्रम का उपयोग भविष्य के संसाधनों और नियंत्रण के लिए जर्मनी के जंगलों का दोहन करने के लिए किया जाएगा। जर्मनी की युद्ध क्षमता, इस कार्यक्रम में जंगलों से लगभग 23,500,000 फेस्ट मीटर लकड़ी का उत्पादन किया गया।

एल्युमीनियम द्वितीय विश्व युद्ध से प्रभावित सबसे बड़े संसाधनों में से एक था। बॉक्साइट, एक एल्यूमीनियम अयस्क और खनिज क्रायोलाइट आवश्यक थे, साथ ही साथ भारी मात्रा में विद्युत शक्ति की भी आवश्यकता थी।

मुख्य लेख: खाड़ी युद्धों का पर्यावरणीय प्रभाव

1991 के खाड़ी युद्ध के दौरान, कुवैती तेल की आग कुवैत से पीछे हटने वाली इराकी सेना की झुलसी हुई पृथ्वी नीति का परिणाम थी। खाड़ी युद्ध तेल रिसाव , जिसे इतिहास में सबसे खराब तेल रिसाव माना जाता है, तब हुआ था जब इराकी बलों ने सी आइलैंड तेल टर्मिनल पर वाल्व खोले और कई टैंकरों से तेल फारस की खाड़ी में फेंक दिया। रेगिस्तान के बीच में तेल भी डाला गया।

2003 के इराक युद्ध से ठीक पहले इराक ने भी विभिन्न तेल क्षेत्रों में आग लगा दी थी।

कुछ अमेरिकी सैन्य कर्मियों ने खाड़ी युद्ध सिंड्रोम की शिकायत की , जो उनके बच्चों में प्रतिरक्षा प्रणाली विकारों और जन्म दोषों सहित लक्षणों से प्रकट होती है। चाहे यह युद्ध के दौरान सक्रिय सेवा में बिताए गए समय के कारण हो या अन्य कारणों से, यह विवादास्पद बना हुआ है।

इराक युद्ध के दौरान जल आपूर्ति संघर्ष की कार्रवाइयों के कारण भारी रूप से दूषित हो गई थी; सैन्य वाहनों से तेल लीक हो जाएगा, सभी हथियारों से दागे गए गोला-बारूद से यूरेनियम भी पानी में बह जाएगा, और मध्य पूर्व में प्रकृति और वन जीवन की समग्र भलाई नष्ट हो गई थी। 626 पारिस्थितिक आतंकवादी हमले में इस्तेमाल किए गए रसायनों ने सऊदी अरब की तट रेखा को प्रभावित किया, इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया, और 34 किलोमीटर के भीतर भरे हुए सभी प्राकृतिक संसाधन दूषित हो गए, दृश्य क्षति के साथ जो आज तक स्पष्ट है।

विश्व घातक संगठन ने पीढ़ीयां कर दीं बर्बाद

एड्स, हेपेटाइटिस, स्वाइनफ्लू चिकनगुनिया कोरोना सब ने बांटी अकाल मौत

राक्षसों का गिरोह आबादी खत्म करने, लूटने कर रहा 70 साल से षड्यंत्र

1946 में संकर वर्णीय घोर जालसाज डकैत छिछोर बुद्धि अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के गिरोह ने जो खाद्य प्रसंस्करण, दवा, स्वास्थ्य चिकित्सा उपकरण उत्पादकों ने विश्व भर में अपना माल बेचने के बहाने अपना कुछ धन दे जो विश्व स्वास्थ्य संगठन बना विश्व घातक संगठन बना दोनों राष्ट्रों की सरकारों में घुस धन देकर वहां पर अपने नियम कानून लागू करवा वहां की जनता को निचोड़ने लूटने और अकाल मौत देने का षड्यंत्र किया। भारत जैसे अनेकों गरीबों के देशों में संयुक्त राष्ट्र बाल आपात निधि या यूनिसेफके माध्यम से उन देशों में अपने प्रसंस्कृत खाद्यों को निशुल्क बांटकर उनका खाद्य परीक्षण और प्रभाव का फूल ट्रायल करवाया। जिसमें सूखे दूध के पाउडर को जो अर्जेंटीना ब्राज़ील वह अन्य देशों में दूध बहुतायत से होता था उसको सुखा, पाउडर बना उसमें कीड़े ना पड़े और दीर्घकाल तक उसका उपयोग किया जा सके। उसमें कीटनाशक व प्रसंस्करण रसायन मिला गरीब देश के बच्चों को निशुल्क बांटकर उसकी कई गुना ज्यादा कीमत पर बिक्री करने खाद्य परीक्षण अफ्रीका और एशिया के इसमें भारत-पाकिस्तान बांग्लादेश आदि के बच्चों परकिया गया जब वह सफल हो गया तो नेस्ले कैडबरीज, युनिलीवर, पार्ले, वॉलमार्ट, भारत की आईटीसी अधिनियम भारत में दूध मोह बच्चों के लिए श्रेष्ठ बढ़कर कई गुना कीमत पर मैच करने एक तरफ मोटी कमाई की दूसरी तरफ बच्चों कोअपनी दवाइयां बेचने के लिए कमजोर करनेका षड्यंत्र किया गया इस प्रकार से पीढ़ीयां को बर्बाद किया जा रहा है। इसके बाद 1980 के दशक में इसी विश्व घटक संगठनने पूरी दुनिया में संभोग जन्य एड्स की बीमारी का प्रसार माध्यमों को खरीद सतत भय फैला कर अपने हजारों करोड़ की कंडोम की जिसकी उस समय में कीमत एक पैसे से भी कम थी, कूद 10 से 20 गुना कीमत में बेंचकर मोटी कमाई कीआगे 1990 के दशक में हेपेटाइटिस की बीमारी का भय फैला हजारों करोड़ के हेपेटाइटिस के रु. 5000/- प्रति टीके से ज्यादा की कीमत के अरबों टीके बेचे गए। उसमें बहाना बनाया गया कि रक्त में हेपेटाइटिस बी पीलिया की बीमारी को खत्म करेगा जबकि उसके बाद से भी लगातार पूरी दुनिया में पीलिया की बीमारी फैलती रही और सामान्य तरीके से ठीक की जाती रही परंतु यह हरामखोर

तो उसे समय ही हजारों करोड़पति का बन चुके थे।

उसे हेपेटाइटिस में ऐ लेकर जेड तक के टीकों की श्रृंखला बनाई गई थी। जो बाद में हल्ला मचने के कारण बंद कर दिए गए। बाद में सन 2000 में स्वाइन फ्लू नाम की बीमारी काफूरी दुनिया में हड़कंप मचाया गया और उसके बिना जांच के किसी भी हवाई अड्डे से नागरिकों को उसे देश में नहीं घुसने दिया गया जबकि वह भी षड्यंत्र ही था और स्वाइन फ्लू का भी टीका हजारों करोड़ को बेचा गया। सन 2010 में चिकनगुनिया की बीमारी का हल्ला फैलाया गया। बेशक उस बीमारी का जानबूझाकर हवा में वायरस फैलाया गया था। इन सब में मोटी कमाई करने के बाद उनके टीकों में शरीर को कमजोर करना और अकाल मौत का तांडव करने का षड्यंत्र किया गया था। उससे भी हजारों करोड़ों की कमाई पूरी दुनिया में की गई

परंतु अब इन सब बीमारियों की आड़ में एचआईवी, हेपेटाइटिस स्वाइन फ्लू के नाम एक जांच जबरदस्ती हॉस्पिटल में मोटी वसूली करने के लिए ठोक दी गई और वही हाल हेपेटाइटिस में भी हुआ उसकी भी अब नियमित जांच की जाती है जबकि एड्स हेपेटाइटिस स्वाइन फ्लू नाम की बीमारी का ना तो कोई वायरस मिला और ना ही कोई ठोस तत्व बस 24 घंटे वर्णसंकर अमेरिकी नये-नये षड्यंत्र करके अपना माल बेचने की आड़ में चिकित्सा वैज्ञानिक अनुसंधान के नाम पर षड्यंत्र करते आ रहे हैं। और आपने सन 2020 में सभी प्रकार के संचार व प्रसार माध्यमों जिसमें टीवी मोबाइल समाचार पत्र पर 24 घंटे फर्जी बीमारी का भय फैला कर फैलाए गए कोरोना के षड्यंत्र की आड़ में किस प्रकार से विश्व घातक संगठन ने पूरी दुनिया के बाजारों को बंद कर एक तरफ न केवल औषधि टीका निर्माता वरन मास्क 50 पैसे रु.1 के मास्क को रुपए 300 से 800 तक, हाथों को कीटाणु रहित करने के लिए 10 रु. 20 उप उत्पाद के रूप में निकले अल्कोहल को रुपए 500 प्रति लीटर सैनिटाइजर रसायन, 100 रु. 200 की ताप मापक को रु. 3 से 5000 तक में बेचने के साथना तो अमेरिका खाद्य औषधि प्रशासन से स्वीकृत और ना भारत के खाद्य एवं औषधि प्रशासन से स्वीकृत और रेमडेसिवियर का इंजेक्शन को जो की रु. 10-20 का था सरकार ने रु. 900 में और जनता ने रु. 3 लाख रुपए तक में खरीदा जिसने खुलकर बीमारियां बांटी मौत का तांडव किया। बिकवाया जाता रहा दूसरी तरफदुनिया के बाजारों को बंद करने का उपदेश ही यही थाकि सारे विश्व के बाजारों में बैठे अरबों पग मार्गों ठेलों पर व्यवसाय करने वालों से लेकर छोटे उद्योगऑन मंदिरों बाजारों दुकानों सबको खत्म कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शॉपिंग मॉल और उनके पैकेज फूड की बिक्री बढ़ाई जाए और बढ़ाई गई और बड़ी औरचंद पूंजी पति ने देश दुनिया के अरबों लोगों को बेरोजगार कर धंधा छीन मोटी कमाई की।

इसी तरफ चूंकि यह कोरोना की बीमारी मार्च अप्रैल में जून में लाई गई जिस समय बच्चों की परीक्षा का समय होता है। बीमारी की आड़ में सारे शिक्षण संस्थान बंद कर देने के कारण दुनिया के गूगल से षड्यंत्र कार्यों ने ऑनलाइन पढ़ाई का षड्यंत्र रच एक तरफ पूरी दुनिया में लगभग दो अरब से ज्यादा मोबाइल मजबूरी में बच्चों की शिक्षा को बनाए रखने के लिए उनके माता-पिता ने खरीद कर दिए। स्वाभाविक था विश्व घातक संगठन की इस चाल सेलाखों करोड़ की कमाई मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों की सिम और उनके डाटा के रूप में हुई। तो दूसरी तरफ मोबाइल कंपनियों की भी बेहताशा वृद्धि हो गई।

इस ऑनलाइन पढ़ाई के षड्यंत्र में यथार्थ में पूरा दुनिया के दो अरब बच्चों का तन मन धन से बचपन बर्बाद करने के साथ देश और दुनिया के बच्चों को इन जालसाज, हरामखोर, षड्यंत्रकारियों ने मोबाइलमें उलझा कर पूरा शारीरिक मानसिक विकास खत्म करने बीमारियां बांटने कमजोर करने का षड्यंत्र भी कर डाला जैसा कि मैं कोरानाकाल में ऑनलाइन पढ़ाई के षड्यंत्र के रूप में बताया था कि किस प्रकार से बच्चे न केवल शारीरिक रूप से कमजोर होकर बर्बाद होंगे वरन मानसिक रूप से बीमार होने के साथ-साथ उनकी आंखे मस्तिष्क व सोचने की क्षमता भी खत्म कर देगा। वही सारी बातें अब विश्व के वैज्ञानिक बच्चों पर मोबाइलों के प्रभाव के बारे में बता रहे हैं। अभी भी वक्त है। बच्चों के बचपन को बचाने के साथ, उनके शारीरिक मानसिक विकास और सोने की क्षमता को विकसित करने के लिए 15 वर्ष के बच्चों तक मोबाइल पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया जाए। ना वह घरों पर चलाएंगे और ना ही स्कूलों में उपयोग करेंगे। जो भी माता-पिता इसका उल्लंघन करे उसकी तीन माह की सजा तक की व्यवस्था कर देनी चाहिए। 15 से 18 वर्ष के बच्चे केवल 2जी मोबाइल का उपयोग करेंगे ताकि माता-पिता व अन्य को संपर्क कर सकें। 18 वर्ष व ज्यादा के युवाओं को भी उसके दुष्प्रभावों के बारे में स्पष्ट बता दिया जाए।

साप्ताहिक
समय माया
samaymaya.com

करोड़ों किसानों मजदूरों छोटे व्यवसायियों
उद्योगों, सरकारी कर्मचारियों अधिकारियों
ठेका संविदा कर्मियों के हितों की रक्षा व देशी
विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के षड्यंत्रों के
विरुद्ध पिछले 25 वर्षों से संघर्षरत

साप्ताहिक समयमाया समाचार पत्र व
samaymaya.com की वेबसाइट पर
समाचार, शिकायतें और विज्ञापन
(प्रिंट एवं वीडियो) के लिए संपर्क करें

मप्र के समस्त जिलों में एजेंसी देना है
एवं संवाददाता नियुक्त करना है

मो. 9425125569 / 9479535569

ईमेल: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- अजमेरा एस.पी. कुमार द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13 प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 299, अम्बेडकर नगर, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक: अजमेरा एस.पी. कुमार, मो. 9425125569, भोपाल प्रतिनिधि- एस.के. भारद्वाज मो. 9425637958